सेवा पूजा

प्रकाशक
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ
नकुड़ रोड, सरसावा
जिला- सहारनपुर (उ. प्र.)

प्रकाशक

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ ट्रस्ट

सरसावा, जिला-सहारनपुर, उ.प्र.

सम्पर्क सूत्रः 7088120381

वेबसाइट : www.spjin.org

Email: shriprannathgyanpeeth@gmail.com

तृतीय संस्करणः 1000 प्रतियाँ

बुद्ध जी शाका 343

विक्रम संवत 2078

सितम्बर 2021

ISBN : 978-93-85094-06-4

न्यौछावरः रू. 30/-

मुद्रक : ज्ञानपीठ मुद्रणालय

श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ

सरसावा, सहारनपुर

उत्तर प्रदेश

प्राक्कथन

प्राणाधार श्री सुंदरसाथ जी,

संसार में प्रेम से बढ़कर कुछ भी नहीं है। श्रीमुखवाणी का कथन है– **ऐही सब्द उठे अवनी में, नहीं कोई नेह समाना।**
पेहेचान पिउ तूं अक्षरातीत, ताही से रहो लिपटाना।।

प्रियतम के साक्षात्कार का एकमात्र साधन अनन्य प्रेम ही है। यद्यपि इस संसार में अनेक प्रकार की भक्ति हैं, किंतु उनमें कर्मकाण्ड और उपासना की ही प्रधानता है। ज्ञान और विज्ञान (हकीकत और मारिफत) की राह पर सभी नहीं चल सकते, इसलिये तारतम ज्ञान के प्रकाश में सभी को सत्य–मार्ग पर ले चलने के लिये कर्मकाण्ड और उपासना को ही प्रेम की सुगंध से सुवासित किया गया है, जिसे सेवा–पूजा कहते हैं।

बिना प्रेम के सेवा नहीं हो सकती। सेवा पूजा का अभिप्राय है – प्रेम पूर्वक सत्कार करना अर्थात् परमधाम में होने वाली अष्ट प्रहर की लीला के भावों में डूबे रहना। इसे शुष्क कर्मकाण्ड के रूप में न मानकर अनन्य प्रेम के भावों में ही प्रयुक्त करना चाहिए, तभी आत्म जागृति का मार्ग खुल सकता है। ब्रह्मसृष्टियों को तो उठते–बैठते, सोते–जागते, पल–पल अपने प्रियतम को अपने धाम हृदय में बसाना होता है। इसके लिये प्रेम पूर्वक की जाने वाली सेवा–पूजा पहली सीढ़ी है, जिस पर कदम रखने के बाद ज्ञान–विज्ञान की राह प्राप्त होती है।

आशा है यह पुस्तिका आपको अच्छी लगेगी।

आपका
राजन स्वामी
श्री प्राणनाथ ज्ञानपीठ, सरसावा

विशय सूची

१.	श्री निजानन्द सम्प्रदाय की पद्धति	7
२.	प्रातः समय गाने की प्रभाती–आवो जी वाला म्हारे घेर	8
३.	प्रभाती– उठो रे प्यारे पिया नवल विलासी	8
४.	प्रभाती– उठि प्रभात निरखिये	8
५.	प्रभाती– जागिये श्री प्राणनाथ	9
६.	प्रभाती– प्रात सुमिरो अक्षरातीत	9
७.	प्रातःकाल का उठापन–रैनि की उनीदी श्यामा	10
८.	झीलना– मारा वाला जी चलो जमुना जल झीलिये	11
९.	स्तुति – पूर्ण ब्रह्म ब्रह्म से न्यारे	12
१०.	चन्दन चढ़ावनी– चलो सखी सुंदरवरजी ने निरखिये	12
११.	मंगल आरती – सुख को निधान जय जय	13
१२.	परिकरमा रविवार की– जुगल स्वरूप रूप छबि छाजे	14
१३.	परिकरमा सोमवार की– पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द रूप	14
१४.	परिकरमा मंगलवार की– धामधनी श्री राज हमारे	15
१५.	परिकरमा बुधवार की– परम सुभग आनंद गुण गाइए	15
१६.	परिकरमा बृहस्पतिवार की–धाम श्यामश्यामा संग प्यारी	16
१७.	परिकरमा शुक्रवार की– प्रथम भोम शोभा अति भारी	16
१८.	परिकरमा शनिवार की– मूल स्वरूप किशोर किशोरी	16
१९.	प्रातःकाल का स्वरूप– श्री राज श्री ठकुराणी जी	17
२०.	अरजी छोटी – निसदिन ग्रहिए प्रेम सों	18
२१.	तीसरी भोम का भोग – तीजी भोम की जो पड़साल	19
२२.	अचवन – अचवन कीजे कृपा निधान	20
२३.	बीड़ी – आरोग्या रस रूप युगल धनी	21
२४.	दाहिनी तरफ का दूजा जो मन्दिर	21
२५.	श्री जी साहेब जी को स्वरूप	22
२६.	बड़ी अरजी	27
२७.	सिनगार आरती– सांभर सैयर मेरी बात	30
२८.	बाल भोग – आवो जी मन मोहन प्यारे	30
२९.	दोपहर का राजभोग– सखियाँ केतिक बन में जावें	31
३०.	बीड़ी – पिया बीड़ी लई जिन हाथ सों	33

३१.	बनों में खेलना – सैयां बैठी जुदे जुदे टोले	33
३२.	चौथे पहर का उठापन – सब सैयां पोहोर पीछल	34
३३.	सायंकाल की स्तुति – वंदौ सतगुरू चरण को	34
३४.	झीलना संझा समय का – श्री जमुनाजी के घाट में	35
३५.	गौरी – नाम माला उर धारो	35
३६.	गौरी – समझि बूझि गुरू कीजे	36
३७.	गौरी – कृष्ण नहीं अवतारी	36
३८.	गौरी – जाऊँ कहाँ महाराज शरण तजि	37
३९.	गौरी – प्राणनाथ मन भाये, आली मोहि	37
४0.	गौरी – मन तुम चलियो निज दरबारा	38
४१.	गौरी – छत्रसालजी ने बाना बांधे	38
४२.	संध्या स्मरण – संझा सुमरन आरती	39
४३.	आरती – आरती एही है पुराण पुरूख पर	40
४४.	आरती – आरती यह सद्गुरू पर कीजे	40
४५.	आरती – आरती आखिरी इमाम की गाइए	41
४६.	आरती – आरती युगल चिदानन्द केरी	42
४७.	आरती – आनन्द आरती संझा कीजै	42
४८.	आरती – आरती कीजे जय जय अन्त न जाको	43
४९.	आरती – आरती कीजै श्री जी साहेब जी तुम्हारी	44
५0.	आरती – आरती अंग चतुर्दश केरी	44
५१.	आरती – आरती सच्चिदानन्द जी की कीजे	45
५२.	आरती – आरती अक्षरातीत की गाईये	45
५३.	सद्गुरू स्तुति – जय जय सद्गुरू आरती तेरी	45
५४.	स्तुति – पूर्णब्रह्म ब्रह्म से न्यारे	46
५५.	आरती उतारने की – कंचन थाल चहुं मुख दिवला	46
५६.	नवोंखण्डों आरती – श्री विजयाअभिनंद की आरती	47
५७.	स्वरूप – सरूप सुंदर सनकूल सकोमल	48
५८.	भोग – कृपानिध सुंदरवर श्यामा	49
५९.	भोग – बांई आंख मेरी बेर बेर फरके	50
६0.	भोग – आरोगो परमानन्द प्यारे	51
६१.	भोग – आज आनन्द अंग न माय रे सैयां	51

६२.	भोग – श्री जू छत्रसाल के आये	51
६३.	भोग – प्यारी प्रेम लुभानी	52
६४.	भोग – नंगन जड़ित चौकी पर दोऊ	53
६५.	भोग – आवत आज सखी मन मोहन	53
६६.	भोग – केसर बाई के मोहोल पधारे	53
६७.	भोग – पिया रंग रंगीले	54
६८.	भोग – आये श्री राज श्यामाजी मिल के	54
६९.	भोग – जेंवन आये श्रीराज महाराज भवन में	55
७0.	नृत्य कृश्ष्ण पक्ष का–निरत होत चौथी भोम में	55
७१.	नृत्य शुक्ल पक्ष का–वाला तमे निरत करो	58
७२.	शयन आरती – आरती करूं मारा वाला जी ने केरी	59
७३.	मध्य रात्रि का स्वरूप (कृष्ण पक्ष का)	59
७४.	मध्य रात्रि का स्वरूप (शुक्ल पक्ष का)	62
७५.	संझा को अवसर (कृष्ण पक्ष का)	64
७६.	संझा को अवसर (शुक्ल पक्ष का)	66
७७.	पौढ़ावनी – पौढ़ो श्रीराज अवार भई है	67
७८.	पौढ़ावनी – मदन मोहन श्याम	67
७९.	पौढ़ावनी – पधारो मेरे वालाजी रंग भरी रैन	68
८0.	पौढ़ावनी – हेली सेजड़ी रे बिछाई	68
८१.	पौढ़ावनी – राज के गुण गाऊं मैं	68
८२.	पौढ़ावनी – रंग परवाली पियाजी को मंदिर	69
८३.	पौढ़ावनी – सोय रहे श्याम सखियन संग मोहोलन	69
८४.	आनन्द मंगल – सदा आनन्द मंगल में रहिये	70
८५.	समैया बधाई वसन्त आदि श्री साथ नो सिनगार	70
८६.	श्रीराज प्रगटन समय की बधाई – आज बधाई बृज	71
८७.	श्यामाजी प्रगटन महोत्सव– श्रीदेवचंद्रजी की बधाई	72
८८.	बधाई श्रीजी की – आज बधाई केसोराय घर	72
८९.	वधावो – धन्य घड़ी धन्य राज पधारिया	73
९0.	राग वसंत – ऐसो वसंत खेलो मारी सजनी	74
९१.	अर्जी धाम चलने की– पिछला बाकी दिन	74
९२.	अर्जी – पियाजी तुम हो तैसी कीजियो	75

श्री निजानंन्द संप्रदाय की पद्धति

सतगुरू ब्रह्मानन्द है, सूत्र है अक्षार रूप।
सिखा सदा इन सें परे, चेतन चिद् जो अनूप।।१।।
सेवन हैं पुरूषोत्तम, गोत्र चिदानंद जान।
परम किशोरी इष्ट है, पतिव्रत साधन मान।।२।।
श्री जुगल किशोर को जाप है, मंत्र तारतम सोए।
ब्रह्म विद्या देवी सही, पुरी नौतन मम जोए।।३।।
अठोत्तर सौ पख साखा सही, साला है गौलोक ।
सतगुरू चरण को छेत्र है, जहाँ जाए सब शोक।।४।।
सुख विलास मांहें नित्य वृन्दावन, ऋषि महाविष्नु है जोए।
वेद हमारो स्वसं है, तीरथ जमुना सोए।।५।।
सास्त्र श्रवण श्री भागवत, बुद्ध जागृत को ज्ञान।
कुल मूल हमारो आनन्द है, फल नित्य विहार प्रमान।।६।।
दिव्य ब्रह्मपुर धाम है, घर अक्षरातीत निवास।
निजानन्द है संप्रदा, ये उत्तर प्रश्न प्रकास।।७।।
श्री देवचन्द्र जी निजानन्द, तिन प्रगट करी सम्प्रदा ऐह।
तिनथें हम यह लखी हैं, द्वार पावें अब तेह।।८।।

बन्दौ सद्गुरू चरण को, करूं सप्रेम प्रणाम।
अशुभ हरन मंगल करण, श्री देवचन्द्रजी नाम।।
श्री प्राणनाथ निजमूल पति, श्री मेहेराज सुनाम।
तेजकुंवरी श्यामा युगल, पल पल करूं प्रणाम।।
श्री प्राणनाथ तुम सत्य हो, तुम से चलत जहाज।
मैं अधीन करनी नहीं, बांह ग्रहे की लाज।।

प्रातः समय गाने की प्रभाती

आवो जी वाला म्हारे घोर, आवो जी वाला।
एकलडी परदेसमां, मूने मूकीने कां चाल्या।।१।।
मूने हती नींदरडी, तमे सूती मूकी कां राते।
जागी जोउं तां पीउ जी न पासे, पछे तो थासे प्रभाते।।२।।
कलकली ने कहूं छूं तमनें, आवजो आणे खिणे।
म्हारा मनना मनोरथ पूरजो, इंद्रावती लागे चरणें।।३।।

प्रभाती

उठो रे प्यारे पिया नवल विलासी,
प्रातः भयो चितरूप प्रकासी।
क्रीड़ा रस रजनी रूप राजे,
प्रात भयो सुख नवले साजे।
निद्रा मद में आनन्द तरंगी,
लोचन रंग रंगीले रंगी।।१।।
इच्छा रूपी लीला रंग भीनी,
नित्य नवतन रस बस जो कीन्ही।
निरखि मंगल मुख सुख दाई।
उठो रे जीवन प्यारी उठावन आई।।२।।
उठि बैठे दोउ सेज्या सुखदाई,
अलबेली जीवन मन भाई।
श्री सुन्दर श्री इन्द्रावती जोड़ी,
निरख नागर नवरंग गोड़ी।।३।।

राग प्रभाती

उठि प्रभात निरखिये, मुख श्री प्राणनाथ प्यारे।।टेक।।
सुन्दर विसाल नैन, बोलत अति मधुरे बैन।
चितवत मन मोहि लेत, मोहिनी सी डारे।।१।।
कोमल अति अंग विसाल, हाथ पाँव कटि रसाल।

अंबुज मुख निरखि दृगन, तन मन धन वारे।।२।।
मुसकत छबि लसन दसन, सोहत अंग तड़ित वसन।
कलंगी सिर गोस पेच, वरनत कवि हारे।।३।।
बृज और रमाये रास, जागनी को करि प्रकास।
वय किसोर निरखि जुगल, ज्ञान सखी धारे।।४।।

प्रभाती

जागिये श्री प्राणनाथ, प्रात भयो प्यारे।।टेक।।
पूर्व दिस उदय अरूण, सखियाँ सब ठाड़ी सरण।
पंखी उड़ि चले चरन, जागिये दुलारे।।१।।
बैठे उठि नाथ सेज, अंग रंग सकल तेज।
झलकत छबि रेजारेज, भूखण संभारे।।२।।
गौर लखि मुखारविंद, विहँसत आनन्द कन्द।
बोलत स्वर मंद मंद, नेत्र तेज तारे।।३।।
सोहत भुज बाजू बंध, कंठहार सर प्रबंध।
वस्त्र छबि तड़ित, मंद अंग संग सारे।।४।।
गावत जेहि अगम निगम, पावत नहिं सुर नर गम।
आये धरि देह सुगम, चौदे भुवन तारे।।५।।
ज्ञान सखी निरखि बदन, लाजत छबि कोटि मदन।
आये सोई नंद सदन, चरणन बलिहारे।।६।।

प्रभाती

प्रात सुमिरों अक्षरातीत श्याम श्यामा जी साथ रे।।टेक।।
प्रथम पाट सातों घाट, दो पुल रेती पाल रे।
सोरा तेर झुण्ड नव देहुरियाँ, टापू निज ताल रे।।१।।
चौबीस हाँस जवेरों की नहेरें, मानिक मोहोल अपार रे।
बन माहोल नहेरों के आगे, हार हवेली चार रे।२।।
गिरद रांग आठो सागर, बन जिमी रंग अपार रे।
अन्नवन मेवा फूल नूर बाग, चहेबच्चा कई भांत रे।।३।।

लाल चबूतरा खड़ोकली, ताड़वन बड़ोवन मधुवन, महावन पुखराज आकासी रे। हजार गुरज चाँदनी सोहे, खोलत वहां के वासी रे।।४।। पुखराजी ताल चारों घाड़नाले, गिरत सोरे चादर खासी रे।अधबिच बंगला मूलकुंड जोए, ढँपी खुली जमुना जी चली जासी रे।।५।। बट केल दोउ पुल अरस परस, सोभा सातों घाट रे। बीच पाट चाँदनी सोहे, बारे थंभ करे झलकार रे।।६।। चांदनी चौक में हरे लाल दरखत, सौ सीढ़ी ऊपर द्वार रे। छः छः हजार मन्दिर गिरद दोऊ हारें,अन्दर हार हवेली चार रे।।७।। गोल हवेली चौंसठ थंभा, विधा विधा रंग अपार रे। तले गिलम ऊपर चन्द्रवा, सोभा चारों द्वार रे।।८।। बारे हजार खिलवत बैठे, संग धनी जी के पास रे। युगल स्वरूप चरन की आसा, राखो तो दयाल सखी उजास रे।।९।।

प्रातः काल का उठावन

रैनी की उनीदी श्यामा पिउ पासे आइयाँ,
पिउ पासे आइयां, प्रीतम पासे आइयाँ।।टेक।।
नैन अरूण सोहे रतिरंग भीने,
पिउ प्यारी मन्द मन्द मुस्काइयाँ।।१।।
अतलस गेंदुवा सेत निहाली,
जाड़ो लगे पिया शाल ओढ़ाइयाँ।
लटपटी पाग छूटे बंधा सोहे,
रंग सेज्या दोऊ लाल सोहाइयाँ।।२।।

अंग सो अंग जोड़े दोऊ मन भाईयां,
अरस परस कर कंठ लपटाइयां।
महारंग रस भीने रसिक युगल पिया,
निरखि निरखि सखियाँ सुख पाईयां।।३।।
चन्दन की चौकी डारौं बैठो प्यारे अंगना,
लवंग की दातौन, जल झारी भरी ल्याइयाँ।
श्री इंद्रावती पति रूप जुगल धनी,
निज नवरंग निरख निरख बलि जाइयां।।४।।

झीलना

मारा वाला जी चलो, जमुना जल झीलिये।।टेक।।
पाट घांट की देहुरि में, जहां रामत कीजे राज।
रतन जड़ित के मोहोल में, कीजे रंग विलास।।१।।
आप अकेले हुजिये, संग श्यामा जी साथ।
हम रूहें बारे हजार मिल के, झीलें तुम्हारे पास।।२।।
कुंजवन की रेती में, पिया चलो दौड़िये जाय।
जो जाको छुई लेत हैं, सो ताके हाथ बिकाय।।३।।
पितांबर कटि काछनी काछे, शीश मुकुट लटकाये।
हेम कसब की ओढ़नी ओढ़े, झाँझरी घुँघरी घमकाये।।४।।
फूलबाग और नूरबाग में, चलो बैठिये जाय।
लहरी आवे सुगन्ध की, वास रही महकाय।।५।।
बड़ेवन और लाल चबूतरा, चलो बैठिये जाय।
पसु पंखी का मुजरा लेवें, नये नये खेल दिखाय।।६।।
रसिक राज श्यामा जी के आगे, सखियां नृत्य कराय।
जापर चितवत हेतसों, देखत नयन सिराय।।७।।
हँसिके राज खुशी भये, पहराए वनमाल।
सखी सकुण्डल अरज करत है, बलि बलि राज कुमार।।८।।

आरती उतारने के प्रथम बोलने की स्तुति

पूर्ण ब्रह्म ब्रह्म से न्यारे, आनंद अखंड अपारे।
शिव सनकादि आदि के इंछित, शेष न पावत पारे।।१।।
अगम जानि के निगम कहाये, खोजि खोजि पचिहारे।
जानि के मूल धनी अंगना अपनी, सो घर आये हमारे।।२।।
श्री ठकुराणी जी सखियन सुधां, लीन्ह संग पधारे।
त्रिगुन फाँस के फंद पड़े थे, सो फंदा निरवारे।।३।।
वारी वारी जाऊँ मैं अपने पिया पर, शोभा मुखहुँ न आवे।
सिंहासन आसन बैठारे, छत्रसाल गुण गावे।।४।।

चन्दन चढ़ावनी

चलो सखी श्री सुन्दरवर जी ने निरखिये,
श्री श्यामा ने जोई जोई मन हरखिये।
श्री श्यामा जी ना अंग हो सुन्दर साथ,
निरखि हरखि उमंग न मात।।१।।
सुन्दर साथ बैठो घोरि घोरि,
परिकरमा तो दीजे फेरि फेरि।
दीपक रंग रे सिंहासन,
छत्रि तो डांडे झालर सोभा अति घन।।२।।
तापर कंचन कलस जो होई,
झलहल जोत करे रहे सोई।
ये रे सिंहासन जोत न मावे,
सखियां तो सनमुख वाणी गावें।।३।।
श्री मंडल नवरंग बाई जी के हाथ,
बेन बाई बेन बजावे तिन साथ।
झरमर बाई झरमरियां जो बजावे,
तान बाई तानियां जो मिलावे।।४।।

सेनबाई स्वर पुरावे तिन संग,
मन में तो धारे उछरंग।
ये उछरंग कह्यो न जावे,
सखियां तो प्रेम सहित वाणी गावें।।५।।
श्री चन्दन पुष्प बहु बिधा राजे,
सुगंध सर्वे मारा वाला जी ने छाजे।
श्री पिया जी ना पूजन इन विध कीजे,
फेर फेर मूल स्वरूप चित में लीजे।।६।।
जो कोई वासना इन घार,
मूल स्वरूप से न काढ़े नजर।
नहीं कोई सुख इन समान,
अंगना तो कोटि बेर कुरबान।।७।।

मंगल आरती

सुख को निधान जय जय सुख को निधान,
मंगल आरती सुख को निधान।
उठि बैठे सुख सेज्या श्री राज,
संग अर्धांग अली लिये लाज।।१।।
रैनि जगे जग मग दोउ नैना,
बोलत बोल मधुर मुख बैना।
निरखि निरखि हरखें ब्रह्मसृष्टि,
जुगल पिया जी सों जोड़े दृष्टि।।२।।
उठि बैठे दोउ सेज्या सुखदाई,
आरती साजि श्रीइंद्रावती ल्याई।
आरती वारती सखियां सर्व अंग,
लेत वारणे निज नवरंग।।३।।

अथ सातों वार की परिकरमा

परिकरमा रविवार की

जुगल स्वरूप रूप छबि छाजे,
सिंहासन के ऊपर विराजे।।१।।
नाचत देत फिर आवत फेरी,
हँसि हँसि लालन मुखतन हेरी।।२।।
गावत गीत बजावत बाजे,
जमुना त्रट पंखी धुनि गाजे।।३।।
फूले फूल फूल लइ आवें,
गुहि गुहि हार पिया जी को पहिरावें।।४।।
देत परिकरमा कर्म सब छूटे,
यह सुख पंचम निसदिन लूटे।।५।।

परिकरमा सोमवार की

पूर्ण ब्रह्म सच्चिदानन्द रूप,
संग श्यामा जी सोहे अनूप।।१।।
चारों चरन सुन्दर सुख दाई,
भूखन की सोभा मुख वरनी न जाई।।२।।
झांझरी घुंघरी कांबी कड़ला अलेखे,
अनवट विछुवा श्री श्यामाजी विसेखे।।३।।
नीलो है चरणिया केसरी इजार,
स्वेत दावन झाँई करे झलकार।।४।।
चोली स्याम जड़ाव साड़ी सेंदुरिया रंग राजे,
हैयड़े पर हार सोभा अधिक विराजे।।५।।
जरी जामा श्वेत जड़ाव अंग सोहे,
नीलो पीलो पटुका देखत मन मोहे।।६।।
जामे ऊपर चादर रंग आसमानी,
छेड़े किनार बेली जाय न बखानी।।७।।

जरी पाग सेंदुरिया जग मग जोत,
राखड़ी कलंगी कही जाय न उद्योत।।८।।
शब्दातीत पिया शोभा है अपार,
श्री महामति अंगना जाय बलिहार।।९।।

परिकरमा मंगलवार की

धाम धनी श्री राज हमारे,
परम निधान परम रूप प्यारे।।१।।
महाराज मंगल रूप राजे,
श्याम श्यामा जी दोऊ अनूप विराजे।।२।।
पूर्ण अक्षर पद से न्यारे,
सोइ जियावर धनी जी हमारे।।३।।
प्रगटे पिया निज अद्भुत सोई,
उपमा पार पावे नहिं कोई।।४।।
परमानन्द जोड़ी सुखकारी,
अंगना पिया पर वारी वारी वारी।।५।।

परिकरमा बुधवार की

परम सुभग आनन्द गुण गाइए,
नवल किशोर निरखि सुख पाइये।।१।।
धाम श्याम जिया मंगलकारी,
संग श्यामाजी दुलहिन पिया प्यारी।।२।।
कुंज निकुंज मध्य क्रीड़त कोहे,
ललित मनोहर सुंदर सोहे।।३।।
करत केलि यमुना तट नेरे,
परम विचित्र जियावर मेरे।।४।।
निज है स्वरूप रूप पिया राजे,
श्री महामति मदन कोटि छबि लाजे।।५।।

परिकरमा बृहस्पतिवार की

धाम श्याम श्यामा संग प्यारी,
ब्रह्मानंद लीला निज न्यारी।।१।।
सात घाट जमुना जल राजे,
झीलत युगल किशोर विराजे।।२।।
सघान कुंज मध्य चात्रिक बोलें,
क्रीड़त लाल लाड़िली डोलें।।३।।
ताल पाल मध्य मोहोल सुहायें,
खोलन प्यारो प्यारी आवें।।४।।
लीला नित्य विहार स्वरूप पर,
भई श्री महामति कुरबान निरखि छबि।।५।।

परिकरमा शुक्रवार की

प्रथम भोम शोभा अति भारी,
बैठे सिंहासन श्री युगल बिहारी।।१।।
सिहांसन कंचन मणि सोहे,
निरखि हरखि सखियां मन मोहे।।२।।
सखियाँ सर्वे शोभा अति सुन्दर,
चौंसठ थंभ तकियों के अन्दर।।३।।
वस्तर भूखान तेज अति जोर,
ता मध्य बैठे श्री युगल किशोर।।४।।
युगल किशोर सोभा किन विध गाइये,
श्री महामति युगल पर वारी वारी जाइये।।५।।

परिकरमा शनिवार की

मूल स्वरूप किशोर किशोरी,
निरखि सखी सच्चिदानन्द जोरी।।१।।
भोम तले की निरख छबि न्यारी,
सोहे सिंहासन प्यारो प्यारी।।२।।

श्वेत सेंदुर केसर आसमानी,
श्याम नीलो पीलो वस्तर जामी।।३।।
देखात खोल सनमुख सखी सारी,
निरखि सिनगार शोभा अति भारी।।४।।
ब्रह्मानंद लीला निज न्यारी,
निरखि श्री महामति नवरंग वारी।।५।।

अथ प्रातः काल का स्वरूप

श्री राज श्री ठकुराणी जी, प्रथम भोम में विराजमान भये, तहाँ कंचन रंग को सिंहासन, तिनके छे पाए छे डांडे। एक एक डांडे में दस दस रंग जवेरों के झलकत हैं। दो छत्री दो स्वरूपों के ऊपर, दो फूल लाल मानिक के, कमल के सी, नीलवी की पाँखड़ी, छत्री के चारों तरफों, जवेरों की झालर। छे डांड़ों पर छे कलस, दो कलस दोउ छत्रियों के ऊपर, ये आठों कलस हेम के। उतरती काँगरी, पशमी बिछौना एक गादी, दोय चाकले, पाँच तकिये। श्री राज श्री ठकुराणी जी, दो चाकले पर विराजमान भये। कै चाकले चित्रकारी, तापर बैठे श्री युगल बिहारी। दोऊ स्वरूप चित्त में लीजे, फेर फेर आत्मा को दीजे। आत्मा से न्यारे न कीजे अधखिन, फेर फेर कीजे दरशन। पहले अंगुरी नख चरन, मस्तक लों कीजे वर्णन। सब अंग वस्तर भूखन, शोभा जाने आत्म की लगन। सुन्दर श्री ठकुराणी जी को सिनगार – सेंदुरिया रंग जड़ाव की साड़ी, स्याम रंग जड़ाव की कंचुकी, नीली लाहिको चरणिया। श्रीराजजी को सिनगार – सेंदुरिया रंग जड़ाव को चीरा, आसमानी रंग जड़ाव की पिछौरी, नीलो न पीलो बीच के रंग को पटुका, केसरिया रंग जड़ाव की इजार, स्वेत रंग जड़ाव को जामा। श्रीयुगल स्वरूप को मूल वागो, अद्वैत की लाठी हाथ में लै के, सब साथ को प्रणाम।।

अरजी छोटी लिखी है

निसदिन ग्रहिए प्रेम सों, श्री जुगल स्वरूप के चरन।
निर्मल होना याही सों, और धाम बरनन।।१।।
इन विध नरक से छूटिए, और उपाय कोई नाहें।
भजन बिना सब नरक है, पचि पचि मरिए माहें।।2।।
एक आत्म धनी पेहेचानिए, निर्मल एही उपाय।
श्री महामति कहे समझ धनी को, ग्रहिए सो प्रेमे पाए।।३।।
श्री महामति कहे महबूब जी, अब दीजे पट उड़ाए।
नैना खोल के अंक भर, लीजे दुल्हा कंठ लगाए।।४।।
गुण अवगुण जेते किए, किए जो पीछले जौन।
साहब सों सांचा रहे, साथी सांचो तौन।।५।।
अवगुण काढ़े गुण ग्रहे, हारे से होए जीत।
साहेब से सनमुख सदा, ब्रह्मसृष्टि ए रीत।।६।।
ए सुख सब्दातीत के, क्यों कर आवें जुबान।
बाले थें बुढ़ापन लग, मेरे सिर पर खड़े सुभान।।७।।
नजर से न काढ़ी मुझे, अव्वल से आज दिन।
क्यों कहूं मेहेर मेहेबूब की, जो करत ऊपर मोमिन।।८।।
कोई देत कसाला तुमको, तुम भला चाहियो तिन।
सरत धाम की न छोड़ियो, सुरत पीछे फिराओ जिन।।९।।
श्री महामति कहे पीछा न देखिए, ना किसी की परवाह।
एक धाम हिरदे में लेय के, उड़ाए दीजे अरवाह।।10।।
श्री महामति कहे अरवाहें अर्स से, जो कोई आई होए उतर।
सो इन सरूप के चरण लेय के, चलिए अपने घर।।११।।
हम तो हाथ हुकम के, हक के हाथ हुकम।
इत हमारा पिया जी क्या चले,ज्यों जानों त्यों करो खसम।।१२।।
तुम तुमारे गुण ना छोड़े, मैं तो करी बहुत दुष्टाई।
मैं तो कर्म किए अति नीचे, पर तुमहीं राखी मूल सगाई।।१३।।

जानो तो राजी राखो, जानो तो दलगीर।
या पाक करो हादी पना, या बैठाओ माहें तकसीर।।१४।।
पिया जी तुम हो तैसी कीजियो, मैं अर्ज करूं मेरे पिउ जी।
हम जैसी तुम जिन करो मेरा, तलफ तलफ जाए जीउ जी।।१५।।
जीवरा तो जीवे नहीं, क्यों मिटे दिल की प्यास जी।
तुम बिना मैं किनसों कहूं, तुम हो मेरी आस जी।।१६।।
आस बिरानी तो करूं, जो कोई दूसरा होये जी।
सब विध पिया जी समरथ, दिन रैन जात रोए रोए जी।।१७।।
जन्म अंधी जो मैं हुती, सो क्यों देखूं नीके कर जी।
जब तुम आप देखाओगे, तब देखूँगी नैन नजर जी।।१८।।
ए पुकार पिया जी सुन के, ढ़ील करो अब जिन जी।
खिन खिन खबर लीजिए, मैं अर्ज करूं दुलहिन जी।।१९।।
ऐती अर्ज मैं तो करूं, जो आड़ी भई अन्तराए जी।
सो आड़ी अन्तराए टालि के, दुलहा लीजे कंठ लगाए जी।।२०।।
कंठ लगाइए कंठ सों, पिया जी कीजे हाँस विलास जी।
वारणे जाए श्री इन्द्रावतीं, पिया जी राखो कदमों पास जी।।२१।।
तुम दुलहा मैं दुलहिन, और न जानों बात जी।
इस्क सों सेवा करूं, सब अंगों साख्यात जी।।२२।।
सदा सुख दाता धाम धनी, मैं कहा कहूं किनसो बात जी।
श्री महामति जुगल सरूप पर, अंगना बलि बलि जात जी।।२३।।

तीसरी भोम का भोग

तीजी भोम की जो पड़साल, ठौर बड़े दरवाजे विशाल।
धनी आवत हैं उठ प्रात, बन सींचत अमृत अघात।।१।।
पसु पंखी का मुजरा लेवें, सुख नजरों सबों को देवें।
पीछे बैठि करें सिनगार, सखियां करावें मनुहार।।२।।
श्री श्यामा जी मन्दिर और, रंग आसमानी है वा ठौर।
चार चार सखियां सिनगार करावें,

श्यामाजी श्रीधानीजी के पासे आवें।।३।।
सोभा क्यों कर कहूं या मुख, चित्त में लिए होत है सुख।
चित्त दे दे समारत सेंथी, हेत कर कर बेनी गूंथी।।४।।
मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजी को भूखन पेहेरावें।
साथ सिनगार करके आवें, जैसा धनी जी के मन भावें।।५।।
सैयां लटकतियां करें चाल, ज्यों धनी मन होत रसाल।
सैयां आवत बोलें वाणी, संग एक दूजी पे स्यानी।।६।।
सैयां आवत करें झनकार, पाए भूखन भोम ठमकार।
झलकतियां रे मलपतियां, रंग रस में चैन करतियां।।७।।
कण्ठ कण्ठ में बांहों धरतियां, चित्त एक दूजी को हरतियां।
सुंदरियां रे सोभतियां, एक दूजी को हांस हंसतियां।।८।।
कई फलंग दे उछलतियां, कई फूल लता जो फेरतियां।
कई हलके हलके हालतियां, कई मालतियां मचकतियां।।९।।
कई आवत हैं ठेलतियां, जुत्थ जल लेहेरां ज्यों लेवतियां।
कई आवें भमरी फिरतियां, एक दूजी पर गिरतियां।।१०।।
कई सीधियां सलकतियां, कई विध आवें जो चलतियां।
सखी एक दूजी के आगे, आए आए के चरनों लागे।।११।।
इत बड़ा मिलावा होई, जुदी रहे न या समें कोई।
कोई छज्जों कोई जालिएं, कोई मोहोलों कोई मालिएं।।१२।।
इत चार घड़ी लों श्री राज बैठे, मेवा मिठाई आरोग के उठे।।

।। अचवन।।

अचवन कीजे कृपा निधान,
सुन्दर अचवन कीजे परम निधान।
एक सखी जमुना जल ले आई,
दूजी लाई खारिका पान।।१।।
काथो सुपारी चूना लवंग इलायची,
बीड़ी वाली चतुर सुजान।।२।।

आप पाय सखियन को दीजे।
श्री छत्रसाल कुरबान।।३।।

बीड़ी लिखी है

आरोग्या रस रूप युगल धनी, बीड़ी तो सुंदर लीधी।
कर सिनगार सिंहासन ऊपर, सिनगार आरती कीधी।।१।।
चहूं ओर रूहें मिल गावें, श्री राज ना मन मोहे।
आज हमारे घेर आनन्द उच्छव, दीप दिवाली सोहे।।२।।
आज रंगनी रेल वही, मारो वालो जी मन्दिर वसिया रे।
श्री इन्द्रावती पतिरूप युगल पिया, नवरंग ना पिउ रसिया रे।।३।।

दाहिनी तरफ का मन्दिर

दाहिनी तरफ दूजा जो मन्दिर, आए बैठे ताके अन्दर।।१।।
नीला ने पीला रंग, ताकी उठत कई तरंग।
दोऊ रंगों की उठत झांई, इन मन्दिरों दिवालों के तांई।।२।।
पैठते दाहिने हाथ जो जांहीं, सेज्या है या मन्दिर मांहीं।
कई जिनस जड़ाव सिंघासन, राज श्यामा जी के दोऊ आसन।।३।।
झरोखो को पीठ देवें, बैठे द्वार सनमुख लेवें।
संग सखियां केतिक विराजें, या समय श्री मंडल बाजे।।४।।
नवरंग बाई जो बजावे, मुख वानी रसीली गावे।
इत बाजत बेन रसाल, बेनबाई गावे गुण लाल।।५।।
सखी एक निकसे एक पैठे, एक आवे उठे एक बैठे।
इन समें भगवान जी इत, दरसन को आवें नित।।६।।
झरोखे सामी नजर करें, प्रणाम करके पीछे फिरें।
इत और न दूजा कोए, स्वरूप एक है लीला दोए।।७।।
भगवान जी खेलत बाल चरित्र, आप अपनी इच्छा सों प्रकृत।
कोट ब्रह्मांड नजरों में आवे, खिनमें देख के पल में उड़ावे।।८।।
और ए तो लीला किशोर, सैयां सुख लेवें अति जोर।
ए लीला सुख केता कहूं, याको पार परमान न लहूं।।९।।

इत खेलत जुत्थ सैंयन सदा आनन्द इन वतन।
मिने राज श्यामा जी दोय, सुख याहि आतम सब कोय।।१०।।
रस प्रेम सरूप है चित, कई विध रंग खेलत।
बुध जाग्रत ले जगावती, सुख मूल वतन देखावती।।११।।
प्रेम सागर पूर चलावती, संग सैयों को भी पिलावती।
पियाजी कहें इंद्रावती, तेज तारतम जोत करावती।।१२।।
तासों महामत प्रेम ले तौलती, तिनसों धाम दरवाजा खोलती।
सैयां जाने धाम में पैठियां, ए तो घर ही में जाग बैठियां।।१३।

श्री जी साहेब जी को स्वरूप प्रारंभ

श्री जी साहेब जी को स्वरूप, अपने चित्त के विखे लीजिये, सुन्दर जा स्वरूप सों, आपन हमेशा रमे खेले, श्री मुख की चर्चा वचन वानी याद कीजिए, श्री जी साहेब जी, प्रातःकाल के समय सुन्दर सुख सेज्या से पौढ़े से उठे, उठि तखत पर विराजमान भये। श्री बाई जी साहेब जी, श्री जी साहेब जी के चरणों लाग के, जोड़े गादी पर विराजमान भई, श्री महाराजा जी, श्री लाल दास जी साथ सब स्वरूपदे, पुरूषदे श्री जी साहेब जी के चरणों लाग लाग के, आप अपनी सेवा में तत्पर आय आय खड़े रहे। श्री जी साहेब जी साथ सबको वचन द्वारा होय अमृत सींचत हैं। मेहरबानगी कर वचन फुरमावत हैं। श्री जी साहेब जी को मुखारबिन्द, अत्यन्त गौर गेहेरी ललक लिये। केश चोये में भिगोये, जरी को गोटा रोसन, सुन्दर बादले को चीरा, केसरिया रंग गोस पेच, मुर्ग पेच, जड़ाव की कनढ़प्पी ऊपर फूलों की कलंगी, तुरा चन्द्र कारी, हीरों की दुगदुगी, यह हमेशा छबि छाजत है। तिलक रंग कंचन, मध्य दो रेखा बिन्दका लाल। केश तिलक निलवट पर, दो रेखा चली लग कान, केश ना घट बढ़, सोभा चाहिये जैसी सुभान। श्री जी साहेब जी के दोऊ भौहें

श्यामता लिये नेत्र तारे तेजवान, फिरते अनियारे चातुरी, मान भरे चंचल, अन्दर श्याह सुपेती लिये, मध्य रेखा लाल। श्री जी साहेब जी के दोऊ कर्ण कोमलमें, चारू मोती दानासरी, अष्टधात के बाला, चार चार करड़े मोतियों की लटकनी, भरे गलस्थल, दोऊ गालों की झाँई, गौर निर्मल नासिका, अत्यन्त शोभायमान, मुखारबिन्द की शोभा, मुख में बीड़ी लाल तम्बोल की, दन्त जानो दाड़िम की कलियां, या मुखारबिन्द की शोभा पर, जीव को कुरबान कर डारिये। श्री जी साहेब जी के दोऊ लाल अधुरों की शोभा, सुन्दर लाँक गौर हरवटी कण्ठ में कंठी तुलसी की विराजमान। छाती कुसादी पेट पाँसे, तेज की अम्बार भरी कमर, खुले अंग देखिये। श्री जी साहेब जी को सुपेत नीमा : चोली अंग को लग रही, घेरदार दावन चीन की शोभा। दोऊ बगलों गुलाब की, चोवाकी खुसबोय, दरसाले की कबाय, दुसाला थुर्मा, सुपेत रंग कबाय पे जुड़ बैठो। श्री जी साहेब जी के दोऊ खम्भे मच्छे, कोनी कलाई कांड़े। दोऊ हथेलियां, बहुत नरम कोमल उज्वल पतली मिहीन रेखा, दसों अंगुरियां दोऊ हस्त कमल की, तापर नख रोशन, सुन्दर हीरों से विराजमान। दसों अंगुरियों में दस बीटी। एक बीटी हीरा की, हीरा, लसनियाँ, गोमादिक, मोती, पन्ना, परवाल, पुखराज, नीलवी। दोऊ अँगुठों में, दो अंगुष्ठाने। रत्न चौक की दोहरी पहोंची। सातों नगों की सात सात दुगदुगी, ताकि एक पहोंची। सात नगों की एक दुगदुगी ताकि दूसरी पहोंची। एक एक जड़ाव के कड़े। जामे की बांह की मोहोरी पर फिरते मोती, कुरली छोटी न मोटी जाड़ी न पतली सबे बनी एक रस। कोहनियों के ऊपर बाजूबन्ध जड़ाव के, कण्ठ में कण्ठी सुवर्ण की,मध्य चौपहलु मादलीया। दूसरी कण्ठी मोतिन की मध्य चौपहलु मानिक, तले मोती लटकत हैं। तीसरी कण्ठी पानड़ी की,

ताकी तीनों दुगदुगी, एक दुगदुगी हीरा की, एक मानिक की, एक नीलवी की। दूसरी बड़े मोतिन की माला, चन्द्रहार उतरती तरह जिनकी जनेऊ की पहेरी है। यह श्री जी साहेबजी के उर ऊपर हार विराजमान। पटका कमर में कस्या है, पटका के पल्लों पर जवेरों के बूटा, इजार रंग केसरी नारो नवरंग श्याम स्वेत, लाखी, लिबोई, जांबूजरदोरिया, कसूंमर केसरी कसुंबी जालीदार, आगे दोऊ नरम झाबे झलकत हैं। पीड़ी अत्यन्त गौर पायचा झीणी कुरली झणवार, इजार की मोहोरी पर फिरते मोती। चारों जोड़े चरन कमल के भूखण, चरण कमल बहुत नरम कोमल, उज्वल लालक लिये, रंग रस भरे कदम। पाणी लांक लाल एड़ियां गृदवाय फिरते कांगरी चरण तली दोऊ चरण कमल की बहुत नरम कोमल उज्वल पतली महीन रेखा। दसों अंगुरियाँ, दोऊ चरण कमल की। ता पर नख रोशन, सुंदर हीरों से विराजमान। ये मेहेर करें चरण जिन पर, देत हृदय पूर्ण स्वरूप, जुगल किशोर चित चुभत, सुख सुंदर रूप अनूप। श्री जी साहेब जी नख सिख लों सिनगार साजि के, तखत पर विराजमान भये। ये बीच कुरान हदीसों के, चेहरा लिखा है। सिर पर बालों की चोटी, गेहुंआ रंग, स्याह आँखें, यही खलकत हैं। साहेदी खुदा की, खुदाय देवे, करे बयान हुकम सिर लेवे। लायक पूजने के यही खुदाय पाक वरहक है। खुसबोय को रूमाल श्री जी साहेब जी के दोऊ हस्त कमल में राखिए। इन चरणों बेर बेर लागिये। सो ये चरण कैसे हैं कि सुखदाई हैं। श्री बाई जी साहेब जी अपने मंदिर में से, नख सिख लों सिनगार साजि के, मेवा मिठाई को थाल भराय के आरती को सरंजाम लेवाय के, आप सुखपाल में विराजमान होय आईं। श्री जी साहेब जी के चरणों लाग के जोड़े गादी

पर विराजमान भई। श्री महाराजा जी, श्री लाल दास जी, साथ सब चरणों लाग लाग भराय के बैठे। श्री बाई जी साहेब जी ने श्री जी साहेब जी के, दोऊ चरण धुवाय के और दोऊ हस्तकमल धुवाय के चुल्लू कराये। मुख हाथ रूमाल सों पुछाय के मेवा मिठाई आरोगावने लगीं। भाँति भाँति के पकवान, भाँति भाँति की तरकारियाँ, अनेक भाँति के बहुव्यंजन, मूँगभात घृत दूध भात, खांड, दधि, सिखरण सहित श्री जी साहेब जी अति रूचि सों आरोगत जात हैं। श्री बाई जु साहेब जी अति प्रीति सों परोसते जाति हैं। श्री जी साहेब जी आरोगत हैं। अधबीच में मंद मंद मुसकनी छबि सों, बातें करते करते ऐसे घड़ी दो एक में, श्री जी साहेब जी आरोग रहे। श्री बाई जु साहेब जी ने, श्री जी साहेब जी को जल अचवाय चुल्लू कराय के, मुख हाथ रूमाल सों पुछाये। केसर कपूर, कस्तूरी, लवंग, लायची, जावित्री संयुक्त पानों की बीड़ी आरोगाय के, तिलक दे चांवर चौड़े। ऊपर फूलों की बरखा करी। वस्तर भूखन पहेराय के श्री बाई जी साहेब जी ने आरती करी, श्री महाराजा जी ने मोरछल करी। श्री लालदास जी ने चंवर करी। श्री जी साहेब जी ने पानों के बीड़ा बखशे। श्री बाई जी साहेब जी ने प्रसाद लियो। श्री महाराजा जी ने प्रसाद लियो। श्री लाल दास जी ने प्रसाद लियो और सब साथ को प्रसाद पहोच्यों। श्री जी साहेब जी सर्व साथ को, ''श्री राज श्री ठकुराणी जी को '' मूल सरूप तथा श्री निजधाम को वर्णन समस्त साथ के हृदय में भरावत हैं। श्री निजधाम नव भोम दसमी आकासी। श्री जमुना जी के सातों घाट। पाट को घाट, जाँबू को घाट नारंगी को घाट, बट पीपल की चौकी, बट को घाट, बट को पुल, कुंज बन की रेती। जमुना

जी के किनारे एक मोहोल एक चबूतरा, जमुना जी दोऊ तरफ ढँपी, बीच में खुली। सोलह देहुरी को घाट, तेरह देहुरी को घाट, झुण्ड को घाट, नव देहुरी को घाट, आठ थंभ, पाल की मोहोलात। टापू की मोहोलात, चौबीस हांस की मोहोलात, जवेरों की नहरें। मानिक पहाड़ की मोहोलात। मानिक पहाड़ के हिंडोले। बन की नहरें। चार हार हवेली, राँग की मोहोलात, नूर सागर, नीर सागर, खीरसागर, दधि ासागर, घृतसागर, मधुसागर, रससागर, सर्वरस सागर। पश्चिम की चौगान, दूब दुलीचा, अन्न बन, फूल बाग, नूर बाग, लाल चबूतरा, खड़ोकली, ताड़वन, ताड़वन के हिंडोले। बड़ोवन, मधुवन, महावन, पुखराज की तरहटी में बाग बगीचे और मोहोलात। पुखराज को चबूतरा, पुखराज की हजार हाँस की चाँदनी। चाँदनी पर मोहोलात। पुखराज के प्रथम थंभ की मोहोलात। पुखराज के दूसरे थंभ की मोहोलात। पुखराज के तीसरे थंभ की मोहोलात। पुखराज के चौथे थंभ की मोहोलात। पुखराज के पांचवें पेड़ की मोहोलात। पुखराज की पष्चिम तरफ की घाटी। पुखराज की उत्तर तरफ की घाटी। पुखराजी पहाड़ में बँगलों की मोहोलात। आकासी मोहोल, आकासी की चाँदनी, चाँदनी पे एक सौ आठ गुरजन की मोहोलात। पुखराजी ताल। पुखराजी ताल के धाम के तरफ की मोहोलात। पुखराजी ताल के उत्तर तरफ की मोहोलात। पुखराजी ताल के दोऊ गुरजन के बीच की देहलान। अधबीच को कुण्ड। खास मोहोल, जहां से सोला चादरें गिरती हैं। ढ़पो चबूतरा, मूलकुण्ड, जहाँ से श्री जमुना जी प्रगटी। ढ़पी जमुना जी। जमुना जी दोऊ तरफ पटी। आगे अधबीच में श्री जमुना जी खुली जहां से जमुना मरोर खाई, वहां से एक मोहोल और एक चबूतरा केल के

पुल ताईं। केल को पुल, केल को घाट, लिबोई को घाट, अनार को घाट, पाट को घाट। यहाँ आय अमृत बन दरसाय के श्री निजधाम दरवाजे के सनमुख चाँदनी चौक में खड़े होय के। अन्दर मूल मिलावे की खिलवत और मोहोल मंदिर गली गली कूचा कूचा समूह सब साथ के हिरदे में भरावत हैं। आठों पहोर की लीला। हलवन, चलवन, पहोर–पहोर घड़ी–घड़ी, साइत–साइत की लीला, याद कीजिए। प्रातः काल से संझा लों और संझा से प्रातः काल लों। साथ सब को हमेशा नूर बरसावत हैं। सो सुखदाई स्वरूप को याद करके। सब साथ मिल के अर्ज विनती कीजिए, कि मेहेरबान। तुम्ही फुरमान लाये, कुंजी भी तुम्ही ल्याये। तुमहीं साहेब इमाम खुदा काजी होय बैठे हो। साथ पर मेहर करो मेहेरबान या जंगल दरियाव अंधेरी में छोड़के, साथ सों अन्तराय करि के बैठे हो। सो ये मोमिन गरीब, अतीम, फकीर, तुम्हारे चरण कमल जानत हैं। ताथें सब साथ की सुरता खेंच के, अपने कदम दिखाओ। सब साथ मिल के यही अर्ज विनती करत हैं। हे श्री जी साहेब जी। सब साथ को बीच खिलवत के उठाय खड़े कीजिये। इनको नूर से पूर कीजिए। समस्त सुन्दर साथ को प्रणाम।

अरजी बड़ी लिखी है

सुन्दरसाथ जी। याद कीजिए, श्री जुगल सरूप सिंघासन के ऊपर विराजमान हैं। आपन सब सखियां श्री राज जी के चरणों तले भराए के बैठी हैं। ऊपर नूर को चन्द्रवा झलकत है। फिरते फिरते चौंसठ थंभ नूर के झलकत हैं। तहां श्री राज जी के चरणों तले खड़े होए के अर्ज विनती कीजिए कि साहेब मेरे तुमहीं जो करी सो भई और करत हो सो होत हैं, और करोगे सो होएगी, तुमारी हमकों इस्क पातसाही की

खबर ना हुती। ना सुख की और ना दुख की और ना मिलाप की ना जुदागी की। तुमारी हमको काहू बात की कछु खबर ना हुती। जब तुम मेहेर का दरिया दिल में लिया तब हम सबों के दिल में उपज्या। जब तुम बरजे, तब हम फेर फेर मांगे। ज्यों तुम ज्यादा ज्यादा कह चले त्यों हम ज्यादा ज्यादा बढ़ चलीं। पहले लई हकें दिल में। पीछे आई माहें नूर। ता पीछे हादी रूहन में। यों कर हुआ जहूर।। हकें हमारे दिल पर। यों कर किया हुकम।। तब हम दिल में उपज्या, मांग्या खेल खसम।। हकें आप सांचे होने को। सब विध कही सुभान।। आंगू ही से कह चले। जो कछू होना निदान।। कह्या उतरते हक ने। अलस्तो बे रब कुंम। फेर कहा अरवाहों ने, वले न भूलें हम।। अये! रूहों, तुम बीच नासूत के जाती हो। मैं तुमारा परवरदिगार हूं। तुम हमको कबहूं न भूलियो। ये रब्द तीसरी भोम से करके। तले की भोम मूल मिलावे मांहीं आन बिराजे। तहां एक चरण चौकी पर लटकत है। दूसरो चरण सिंघासन के ऊपर। आपन सब सखियां श्री राज जी के चरणों तले भराए के बैठी हैं। ज्यों दाड़िम की कलियां।। तब श्री राज जी ने प्रथम इच्छा श्री भगवान जी पर डारी। ज्यों जाग्रत में ब्रह्मांड देखते थे। त्यों स्वप्न में देखने लगे।। फेर सखियों पर सुपन सरूप हुकम को आवरण डारयो। बारह हजार सखी बृज में इकट्ठी आईं। तहां ग्यारह वर्ष बावन दिन लों इश्क प्रेम में खेले। रास लीला खेल के आए बरारब श्याम। तहां त्रेसठ वर्ष लों आयतें सूरतें कुरान हदीसों में लिख कर आरबों के हाथ देकर हैयातुल नबी ने कूच किया याने बीच परदे के हुए।। साल नव से नब्बे मास नव। हुए रसूल को जब। रूह अल्ला मिसल गाज़ियो। मोमिन उतरे तब। रूह अल्ला ने चौथे

आसमान से उतरे, रूहअल्ला तीन दीदार देखे।। प्रथम दीदार में बीच राह के पैगम्बर साहेब ने नूर को पटुका बंधायो।। दूसरे दीदार में अखंड बृज देखे, श्री कृष्ण पिया संग मिले।। तीसरे दीदार में बीच बेजा मुनारे के, नूर के काबे में से कलीद (कलीज) किल्ली दूसरी सूरत को दई। महंमद मिले ईसे मिने, तब अहमद हुआ श्याम। अहमद मिले मेहेंदी मिने, ए तीनों मिल हुए इमाम।। ऐसे सखत बखत में वसियत नामे चलाए के हमारी मदत कराई। अल्ला कलाम से साहेदी दई। वेद पुराणों से साहेदी दई। चार आसमान की पहचान कराई, पांच भांति पैदाइस की पहचान कराई। छः भांति नमाज की पहचान कराई। सातों बड़े निसान कयामत के खोल दिए। आठ भांति भिस्त की पहचान कराई। नाजी फिरका, नारी फिरका। असराफील जबराईल। आम खलक की पहचान कराई। खुदा ताला ने कजा करी। महमद साहेब ने सिफायत करी। रूहें अर्स की गली गली फिरवली। असराफील ने खुस आवाज सों कुरान को गाया। फरिस्ते काम हाल छोड़ के फिरे। अर्स की किल्ली जाहेर भई। मोमिन मोमिन सिजदा को आवें, तो सिजदा करें। काफर मुनाफक सिजदे को आवें, तो पीठ उन्हों की सींग सी कड़ी हो रहे।। चमड़ी टूटे, पर सिजदा उन्हों से न होवे। ताथें दोज़ख की आंच आई।। खबरदार होए कलमा कहो। सातमें दरवाजे की आंच आई। कलमा कहो दिल में देखो।। जिन दिल पर नकस नहीं। ऐसे काफरों को जलायो। ऐसे ही जलायो चाहिए।। दोऊ तरफों की गीता किताबें खोल दई। तीनों सृष्ट जीव ईश्वरी ब्रह्म की पहचान कराई।। ज्यों बिल्ली अपने बच्चों को लेती है। वाय मुस्क को छोड़ देती है। तैसे ही तुम हमारे लाड के पूरन करनहारे मेहेरबान!

हमारे लाड पूरन कीजिए।। जिन तुमारे चरणामृत प्रसाद को आसरो लियो होए। शब्द वाणी कानों से सुनी होए, या जुबान से कही होए। तिनको इन जहर जिमी से छुड़ाए के, अपने कदमों तले बैठाए कर, साख्यात दीदार दीजे।। इनको नूर से पूर कीजे।। सब मिल के गोदी ओढ़ के यही अर्ज विनती करत हैं। श्री जी साहिब जी को प्रणाम। श्री बाई जी को प्रणाम।। श्री महाराजा जी को प्रणाम।। श्री लालदास जी को प्रणाम।। श्री समस्त सुन्दर साथ को प्रणाम। मेहेरबान महाराजाजू मोमिनों के वास्ते सब साथ मिलके अर्ज विनती कीजे, मेहेरबान महाराजाजू, मोमिनों की बलाएं सब दफे कीजे, इनको नूर से पूर कीजे, यों साथ सबको बीच खिलवत के उठाए खड़े कीजे। समस्त सुन्दरसाथ को प्रणाम।।

सिनगार आरती

सांभर सैयर मेरी बात, श्री प्राणनाथ पिउ विलसिए।
आपण कीजे मंगलचार, आरती उमंग भर कीजिए।।१।।
राजित जुगल किशोर, सिंघासन कंचन मणी।
अति सुन्दर कंचन थाल, दीपक जोत रजित घणी।।२।।
श्री इन्द्रावती उछरंग, आरती करे अखंड धनी।
बार हजार सखी संग, सोभा सी कहूं तेहतणी।।३।।
बाजत ताल मृदंग, गान करें सखी सहू मली।
भूखन करे झलकार, सुरता पहोंची मन रली।।४।।
एवी आरती अखंड स्वरूप, निरखि हरखि गुण गाइये।
श्री महामति युगल स्वरूप, निरखि निरखि सुख पाइये।।५।।

बाल भोग

आवो जी मन मोहन प्यारे, सुख सबों अंग दीजे।
कीजे कृपा पिया जान के अपनी, भोजन आज यहां कीजे।।१।।
हंसि कर मन्दिर माँहि पधारें, उष्णोदक नवराये।

नवल किशोर किशोरी सुन्दर, आसन उपर सुहाये।।२।।
चोवा चन्दन अतर अरगजा, केसर कुम कुम ल्याये।
चर्चे रूप युगल रस भीने, वनिता चहुँ ओर गावें।।३।।
सकल पाक बहु व्यंजन अथाने, मेवा मधुर मिठाई।
खट रस स्वाद रसोई रूचि के, थाल संजोए सखी ल्याई।।४।।
रसिक राज सुंदरवर श्यामा, आरोगे रूचि कीजे।
श्री जमुना जल कनक कचोले, प्रीतम प्यारे पीजे।।५।।
करके भोजन उठे हैं अचय के, सेज ऊपर धनी आये।
कपूर कस्तूरी सुवास की बीड़ी, आरोगे मन भाये।।६।।
नाना रंग प्रेम रस विलसत, सुंदर सर्व सुख दीजे।
नागर नवल नागरी श्री महामति, नेह नवरंग रस भीजे।।७।।

दोपहर का राज भोग

सखियाँ केतिक बन में जावें, साक पान मेवा सब ल्यावें।
घड़ी चार खेल तित करें, दिन पोहोर चढ़ते आवें घरें।।१।।
ए सब इच्छा सों मंगावें, पर सखियों को सेवा भावे।
सैंया सेवा करन बेल ल्यावें, लेवें एक दूजी पे छिनावें।।२।।
निकसते दाहिनी तरफ जो ठौर, सैयां आए बैठें चढ़ते दिन पोहोर।
मिलावा होत दिवालों के आगे, सैयां पान बीड़ी वालने लागे।।३।।
मसाला समार समार के लेवें, सखी एक दूजी को देवें।
डेढ़ पोहोर चढ़ते दिन, बीड़ी वाली सैयां सबन।।४।।
बीड़ियों की छाब लेकर, धरी पलंग तले चौकी पर।
श्री राज बैठे बातां करें, श्री श्यामा जी चित्त धरें।।५।।
सैयां परस्पर करें हांस, लेवें धनी जी को विविध विलास।
घड़ी दो एक तापर भई, लाड़बाई आए यों कही।।६।।
श्री धनी जी की आज्ञा पाऊं, तो या समें रसोई ले आऊं।
श्री धनी जी ने आज्ञा करी, सैयां चौकी आन आगे धरी।।७।
सैयां दोए चाकले ल्याई, सो तो दोनों दिए बिछाई।

श्री राज उतारे वस्तर, पेहेनी पिछौरी कमर पर।।८।।
श्री राज चाकले आए, श्री श्यामा जी संग सोहाए।
श्री राज पखाले हाथ, श्री श्यामा जी भी साथ।।९।।
सैंया दौड़ दौड़ के जावें, आरोगने की वस्तां ल्यावें।
मेवा अंन ने साक मिठाई, कई विध सामग्री ले आईं।।१०।।
एक ले चली साक कटोरी, तापे छीन ले चली दूसरी।
तिनथें झोंट ले चली तीसरी, चौथी वापे भी ले दौरी।।११।।
जो कदी छीन लेत हैं जिनपे, पर रोस न काहूं किनपे।
इत थें जो फिर कर गैयां, तिन और कटोरी जाए लैयां।।१२।।
यों एक एक पे लेवें, हेत एक दूजी को देवें।
सब मन्दिर करें झनकार, स्वर उठत मधुर मनुहार।।१३।।
सैयां दौड़त हैं साम सामी, सब्द रह्यो सबों ठौर जामी।
कई स्वर उठत भूखन, पड़छंदे परें स्वर तिन।।१४।।
कई बिध उठत मीठी बानी, मुख बरनी न जाए बखानी।
इन समें की जो आवाज, सोभा धाम में रही विराज।।१५।।
दूध दधी ल्याई लाड़बाई, सो तो लिए मन के भाई।
सब खेलें हाँसी करें, आए आए धनी जी के आगे धरें।।१६।।
या समें दौड़त भूखन बाजे, पड़छंदे भोम सब गाजे।
झारी लेके चल्लू कराई, मुख हाथ रूमाल पोंछाई।।१७।।
श्री श्यामा जी चल्लू करी, दोए बीड़ी दो मुख में धरी।
श्री राज उठ बैठे सिंघासन, संग श्यामा जी उठे ततखिन।।१८।।
युगल–दोए आसन जोड़े आए, सैयां चौकी चाकले उठाए।
सैयां तले आरोगने गैयां, आरोग आए पान बीड़ी लैयां।।१९।।
सेज्या आए श्री जुगल किशोर, तब दिन हुआ दो पोहोर।।२०।।

सिनगार करें देहलान में, आरोगें और मन्दिर।
इतही दीदार नूर को, दिन पौढ़ें पलंग अन्दर।।

बीड़ी

पिया बीड़ी लई जिन हाथ सों, सोभित पतली अंगुरी।
ता बीच जोत नंगन की, अति झलकत हैं मुंदरी।।१।।
बीड़ी तो मुख में मोरत, सुंदर हरवटी हँसत।
सोभा इन मुख क्यों कहूं, जो पिया बीच में बात करत।।२।।
एक लालक तम्बोल की, क्यों कहूं अधुर दोऊ लाल।
दंत सोभित मुख मोरत, खूबी ना इन मिसाल।।३।।
लाल उज्जल दोऊ रंग लिये, बीड़ी लई मुख अँगुरी नरम।
नेक मूंदे मुख बोलत, अति सुंदर मुख शरम।।४।।
नेक खोले अधुर मुख बोलत, करें प्यारी बातें कर प्यार।
सो सुख देत हैं आसिकों, जिनको नहीं सुमार।।५।।

दोपहर के बाद सखियां बन में खेलने जाती हैं

सैयां बैठी जुदे जुदे टोले, करें रेहेस बातें दिल खोलें।।१।।
तित कई बिध रस उपजावें, कई विलास मंगल मिल गावें।
कई हँस हँस ताली देवें, यों कई विध आनन्द लेवें।।२।।
कई बैठत छज्जों जाए, बैठें अंग सों अंग मिलाए।
मुख बानी सों हेत उपजावें, एक दूजी को प्रेम बढ़ावें।।३।।
रस अनेक बातन लेवें सुख, सो मैं कह्यो ना जाए या मुख।
सरूप शोभा जो सुन्दरता, बस्तर भूखन तेज जोत धरता।।४।।
कई बैठत मिलावे आए, बैठे अंग सों अंग लगाए।
सुख एक दूजी को उपजावें, मुख बानी सों प्रीत बढ़ावें।।५।।
हांस विनोद ऐसा करें, सुख प्रेम अधिक अंग धरें।
यों सुख मिनों मिने लेवें, सखी एक दूजी को देवें।।६।।
कई बैठत जाए हिंडोले, अनेक करत कलोलें।
कई बैठत जाए पलंगे, बातां करत मिनों मिने रंगे।।७।।
यों अनेक विधे सुख नित, पिया जी को सदा उपजत।।८।।

चौथे पहर का उठापन

सब सैयां रे पोहोर पीछल, टोले तीसरी भोम आवें चल।।१।।
मन्दिर आइयां सैयां जब, खुले द्वार दरसन पाए सब।
तब आए सबे सुखपाल, श्यामा जी बैठे संग लाल।।२।।
दोए दोए सैयां सब संग, मिल बैठे करें कई रंग।
सुखपाल चलावें मन, ज्यों चाहिए जैसा जिन।।३।।
या जमुना जी या तलावे, आए खेलें जो मन भावे।
श्रीराज श्यामा जी के डेरे, सुखपाल उतारे सब नेरे।।४।।
जुत्थ जुदे जुदे बन खेलें, खेल नए नए रंग रेलें।
तब लग खेलें साथ सब, दिन घड़ी दोए पीछला जब।।५।।
सैयां मिलकर पिउ पासे आवें, झीलने की बात चलावें।
श्री राज श्यामा जी उठ कर, उतारे हैं वस्तर।।६।।
पेहने वस्तर जो झीलन, राज श्यामा जी सैंया सबन।
इत एक घड़ी लों झीलें, जल क्रीड़ा कई रंग खेलें।।७।।
बाकी दिन रह्यो घड़ी एक, तामें सिनगार किए विवेक।।८।।

सायंकाल की स्तुति (संध्या आरती)

वंदौ सद्गुरू चरण को, करूं प्रेम प्रणाम।
अशुभ हरन मंगल करन, श्री देवचन्द्र जी नाम।।१।।
श्री देवचन्द्र जी को दरश दीयो, जो हैं पूरन रूप।
तारतम को तत्व कह्यो, हिरदे बैठि स्वरूप।।२।।
धाम धनी अखंड हैं, पावन पूरन नाम।
पद के परे परम पद, सो कहिये परनाम।।३।।
गुरू कंचन गुरू पारस, गुरू चंदन परमान।
तुम सद्गुरू दीपक भये, कियो जो आप समान।।४।।
तुम स्वरूप, तुम में स्वरूप, तुम स्वरूप के संग।
भेद तुम्हारो को लखे, ब्रह्मनन्द रस रंग।।५।।

तुम खेवट भानु वह देश के, देहु चछु आप समान।
दृष्टि तुम्हारी क्यों रहे, संशय तिमर अज्ञान।।६।।
जो पद नारायण भजे, ब्रह्मा विष्णु महेश।
महाविष्णु वांछित सदा, मोहे पहुचांओ वा देश।।७।।
काल करम भव दुःख से, तुम हीं छुड़ावन हार।
परमहंस पद देत हो, क्षर अक्षर के पार।।८।।
क्षर अक्षर के पार है, अक्षरातीत आधार।
बिन संबंध न पाईये, कोटिन करे आचार।।९।।
वेद थके ब्रह्मा थके, थकि गये शेष महेश।
गीता को जहां गम नहीं, वह सद्गुरू को देश।।१०।।
सतगुरू मेरे श्याम जी, मैं अहनिस चरणें रहूँ।
सन्मंध मेरा याही सों, मैं ताथें सदा सुख लहूँ।।११।।
श्री प्राणनाथ निज मूल पति, श्री मेहेराज सुनाम।
तेज कुंवरि श्यामा जुगल, पल पल करूँ परनाम।।१२।।

झीलना संझा समय का

श्री जमुना जी के घाट में, अमृत वन पाट में,
करत क्रीड़ा जल जोयना, संग सोहे श्यामा।
सच्चिदानन्द चितचाहना, संग सोहे श्यामा।।१।।
राजित किशोर किशोरी, शोभित जुगल जोड़ी,
राज रसिक पिया प्रेमना। संग सोहे श्यामा।।२।।
सकल सिनगार किये अजब तिलक दिये।
रंग रंगीले दोऊ रंगना, संग सोहे श्यामा।।३।।
प्रीति सों प्रीतम प्यारी, निरखत नवरंग नारी।
श्री जी अखंड सुख निजधामना, संग सोहे श्यामा।।४।।

अथ गौरी

नाम माला उर धारो, साधो भाई नाम माला उर धारो।
संझा समय शुद्ध चित करके, धनी को नाम चितारो।।१।।

चार पदार्थ पाये अमोलक, सो वृथा नहीं हारो।
मनुष्य तन दुर्लभ है साधो, सो क्यों भूल गुजारो।।२।।
राज–राज मुख रटन रातदिन, स्वासहिं स्वास पुकारो।
जिस देही धनी पूरन मिलि हैं, सोई जनम तुम्हारो।।३।।
कृष्ण सखी मुख राज बखानत, क्षर अक्षर से न्यारो।
पूरन ब्रह्म सनातन दोय भुज, मोहन मीत हमारो।।४।।

गौरी

समझि बूझि गुरू कीजे,
साधो भाई समझि बूझि गुरू कीजे।।टेक।।
यह तो सौदा परम अमोलक, निरखि परखि के लीजे।।१।।
ज्ञान गम्भीर शील सन्तोषी, प्रेम अमृत मुख भाषे।
अति निर्मल निजनाम सुनावे, जन्म मरण से राखे।।२।।
धीरजवन्त धर्म प्रतिपालक, वेद लै भेद बतावे।
आप तरे शिष्यन को तारे, बहुरि न भव जल आवे।।३।।
खीर नीर को करे निवेरा, माया ब्रह्म चिन्हावे।
जीव को आदि अंत बतलावे, अलख वस्तु लखावे।।४।।
दूजी साखी कबीर की देवे, विध विध वाणी सुनावे।
करके अर्थ बूझि जब देखो, तब संशय मिट जावे।।५।।
यह तो बात प्रगट है साधो, शिव सुक मुनि श्रुति गाई।
बिना सद्गुरू कोई पार न पावे, कोटि करे चतुराई।।६।।
जो कोई खोज करे सद्गुरू की, सब्दै में लखि पावे।
बिना विवेक वृथा पचि मरना, भरम में रैण दिन धावे।।७।।
ता कारण यह सार सब्द पद, कहत मुकुन्द विचारी।
हंसा होए सो सुन के बूझे, माने वचन हमारी।।८।।

गौरी

कृष्ण नहीं अवतारी, साधो कृष्ण नहीं अवतारी।।टेक।।
पूर्णब्रह्य सनातन दोय भुज, कहत है निगम पुकारी।।१।।

वेद पुराण शास्त्र सब भाखे, साधु सकल संसारी।
पांच तत्व गुण तीन लोक तें, है मथुरा निज न्यारी।।२।।
लोक चतुरदश हैं परलेवस, आदि अंत ओंकारी।
तब कहां कृष्ण कहां निज मथुरा, देखो मनहिं विचारी।।३।।
गोपी कृष्ण अनादि एक हैं, जल तरंग ज्यों वारी।
कारण मूल रच्यो एक कारज, आय भई ब्रज नारी।।४।।
तिन गोपिन की पदरज ईछित, ब्रह्मा विष्णु त्रिपुरारी।
करि करि कोटि तपस्या बहुविध, त्रिगुण थके पचिहारी।।५।।
दश अवतार राजा होय बरते, विष्णु माया अनुसारी।
राम आदि अवतार होत हैं, सो बैकुण्ठ विहारी।।६।।
जाय द्वारका में राज कियो है, ब्याही सोले सहस्त्र कुमारी।
सो संपूर्ण बैकुण्ठ के ठाकुर, संख चक्र गदा धारी।।७।।
वेद ऋचा तलफत बृज छोड़ी, विरहा दाह में जारी।
कृष्ण द्वारका काहे न बुलाई, गोकुल गोपकुमारी।।८।।
लीला त्रिविध भई नाना विध, बाल तरूण वृद्ध वारी।
कहत मुकुन्द सद्गुरू समरथ बिन, कोई ना सके निरवारी।।९।।

गौरी

जाऊँ कहाँ महाराज, सरण तजि जाऊँ कहाँ महाराज।
अनते ठौर नहीं कोई हमको, चरण छोड़ि श्री राज।।१।।
जो जो आये धनी सरण तुम्हारी, तिनके किये सब काज।
शरणे मरणे सुन्यो नहिं कबहूं, बड़े हो गरीब निवाज।।२।।
पावन–पतित निगम यस गावत, श्रवण सुनत आवाज।
जो अघ पतित मिटे न मेरो, वृद्ध को आवत लाज।।३।।
विनती करत 'मुकुन्द' दीन द्विज, सब पतितन सिरताज।
अंगना जानि पिया पार उतारो, लेहु चढ़ाय जहाज।।४।।

गौरी

प्राणनाथ मन भाये, आली मोहि प्राणनाथ मन भाये।
विंध्याचल पर्वत के ऊपर, सुन्दर धाम सुहाये।।१।।

गुंमट बँगला बन्यो है धनी को, हीरन तखत धराये।
रत्न जड़ित पद्मावती सोहे, देव सकल ललचाये।।२।।
विख की नदिया अमृत कीन्हों, सुख सबन पहोंचाये।
भजन किरंतन होत रात दिन, सुनत मोक्ष फल पाये।।३।।
श्री ठकुराणी जी साथ सकल मिलि, जागनी रास खेलाये।
श्री सुंदर श्री इन्द्रावती जीवन, अमर सखि चंवर ढ़ोराये।।४।।

गौरी

मन तुम चलियो निज दरबारा।।टेक।।
पांच तत्व वैकुंठ सुन्यतें , गुन निर्गुन से न्यारा।।१।।
ओंकार और काल निरंजन, ज्योति सरूप तें न्यारा।
सबलिक ब्रह्म अव्याकृत केवल, अक्षरहूं से पारा।।२।।
परमधाम दस खंड विराजे, सोभा रतन पहारा।
सात घाट जमुना जी के दोऊ पुल, आगे अक्षर नूर द्वारा।।३।।
चाँदनी चौक चबूतरा चारों, लाल वृक्ष हरियारा।
सौ सिढ़ियां चढ़ि ऊपर जइये, थंभ अठाईस न्यारा।।४।।
चारों हार हवेली होय के, चौंसठ थंभ निहारा।
तले गिलम ऊपर चन्द्रवा, सोहे चारों द्वारा।।५।।
कंचन रंग जड़ित सिंघासन, तहाँ पर युगल विहारा।
चारों खांचो में लाल जो तकिये, बैठे बारे हजारा।।६।।
झलहल ज्योति करे सिंघासन, सोभा बहुत अपारा।
अमर सखी सेवा में हाजिर पावे नित्य दीदारा।।७।।

गौरी

छत्रसाल जी ने बाना बांधे, निजनाम शरण को आये।
चौदे लोक में आन चलाये, ऐसा द्वन्द मचाये।।१।।
पंडित वेद पुराण पढ़ैया, तिनहुं के डिंभक भाने।
कोई दिन चली है काजी की बाजी, फेर हुकम तले आये।।२।।
देवी और देवता छोड़े, छोड़ी है कुल की आस।

कीन्हों एक संग साधुन को, जिनको श्री धाम में वास।।३।।
एते दिन माया भर्माया, ठीक लगन नहिं पाया।
सखी साकुण्डल के पिया प्रगटे, श्री धाम धनी लौ लाया।।४।।

संध्या स्मरण

संझा सुमरन आरती, भजन भरोसे दास।
मनसा वाचा कर्मणा, श्री युगल चरण की आस।।१।।
श्वास श्वास निजनाम जपो, वृथा श्वास मत खोय।
ना जानो इन श्वास को, आवन होय न होय।।२।।
झण्डा गाड़यो प्रेम को, चहुं दिस पिउ पिउ होय।
ना जाने इस झुण्ड में, कौन सुहागिन होय।।३।।
सुकव्यास कहे भागवत में, प्रेम न त्रिगुन पास।
प्रेम बसे ब्रह्मसृष्टि में, जो खेले स्वरूप बृज रास।।४।।
नवधा से न्यारो कह्यो, चौदह भुवन में नाहिं।
सो प्रेम कहां से पाइये, जो वसत गोपियन माहिं।।५।।
प्रेम प्रेम सब कोई कहें, प्रेम न चीन्हें कोय।
आठ पहर भीना रहे, प्रेम कहावे सोय।।६।।
प्रेम छिपाये ना छिपे, जो घट प्रगट होय।
जो के मुख बोले नहीं, नयन देत हैं रोय।।८।।
आया है सो जायगा, राजा रंक फकीर।
कोई सिंघासन चढ़ि चले, कोई बांधे जात जंजीर।।९।।
ये तो गति है अटपटी, झटपट लखे न कोय।
जो मन की खटपट मिटे, चटपट दरसन होय।।१0।।
प्रेम न बारी उपजे, प्रेम न हाट बिकाय।
बिना प्रेम को मानवा, बांधे यमपुर जाय।।११।।
क्या मुख ले विनती करूं, लाज आवत है मोहि।
तुम देखत अवगुण किये, ये कैसे भाऊं तोहि।।१२।।
मैं अपराधी जन्म का, नख सिख भरा विकार।

तुम दाता दुःख भंजना, मेरी करो संभार।।१३।।
मो में गुण कछू है नहीं,तुम गुण भरे हो झाझ।
गुण अवगुण न विचारिये, बाँह गहे की लाज।।१४।।
अवगुण किये तो बहु किये, कर्तव्य मती निहार।
भांवे वंदा बकसिये, भांवे गर्दन मार।।१५।।
अछरातीत के मोहल में, प्रेम इश्क बरतत।
सो सुध अछर को नहीं, किन विध केलि करत।।।१६।।
तन दीपक मन ज्योति करूं, प्रेम घृत लौ लाय।
सोभा लखि श्री राज की, आरती करूं चित लाय।।१७।।

आरती

आरती एही है पुराण पुरूख पर,
कर तुम निज अंग रूप प्रेम धर।।१।।
पहेली आरती करूं पुरूषोत्तम,
जाको वेद गावत कर उत्तम।।२।।
दूसरी आरती अद्वैत सुहाई,
जाको निगम अगम करी गाई।।३।।
तीसरी आरती सच्चिदानन्दा,
जहां नहि मोह माया दुःख द्वन्दा।।४।।
चौथी आरती अखंड अपारा,
गुण निर्गुण क्षर अक्षर पारा।।५।।
पाँचमी आरती है निज सोई,
जहां लीला नित्य विहार जो होई।।६।।
आरती साजि श्रीइन्द्रावती लाई,
निज नवरंग परम पद पाई।।७।।

आरती

आरती यह सद्गुरू पर कीजे,
सद्गुरू स्वरूप आप लखि लीजे।।१।।

सोई सद्गुरू बृज के वासी,
बृजबाला संग सदा सुख रासी।।२।।
सोई सद्गुरू रास विलासी,
खोले रास अखण्ड अविनाशी।।3।।
सद्गुरू श्री देवचन्द्जी सुहाये,
तेज तारतम आप ले आये।।४।।
सोई सद्गुरू जीवन प्यारे,
आदि अन्त लों किये उजियारे।।५।।
सद्गुरू स्वरूप श्री इन्द्रावती राजे,
निज नवरंग संग आप विराजे।।६।।

आरती

आरती आखिरी इमाम की गाइए,
जाको नाम लेत सुख पाइए।
पहली आरती करूं महंमद पर,
जाथें कुरान ल्याए उमत पर।।१।।
दूसरी आरती ईसा रूह अल्ला,
जाथें चौदे तबक पैसल्ला।।२।।
तीसरी आरती करूं तारतम की,
जाथें रोसनाई भई है अन्दर की।।३।।
चौथी आरती इमाम कहलाए,
वेद कतेब दोनों जाहेर लखाए।।४।।
पांच स्वरूप पिया जाहेर लखाए,
वाकी शोभा मुख वरनी न जाए।।५।।
श्री महामत मेहर मेहेबुब कहलाए,
केसर कदम पकड़ गुन गाए।।६।।
आरती आखिरी इमाम की गाइये,
जाको नाम लेत सुख पाइए।।

आरती

आरती युगल चिदानन्द केरी,
तन मन आप वारने लेरी।।१।।
जब नहिं त्रिगुण मोह दुःख द्वन्दा,
तबहिं अखंड सतचिद आनंदा।।२।।
प्रेम प्रवाह जानत नहिं कोई,
जग उपजे के कारण दोई।।३।।
पहली आरती बृज में आवन,
पूरन प्रेम पगे मन भावन।।४।।
दूसरी आरती रास विलासा,
अक्षर बुद्धि कीन्हों निज वासा।।५।।
तीसरी आरती निज आवेसा,
आये पति जी ने किये उपदेशा।।६।।
चौथी आरती बुध जी श्यामा,
ल्याए ज्ञान परम निजधामा।।७।।
पांचवी आरती प्रीतम प्यारे,
श्री प्राणनाथ परना पगु धारे।।८।।
सखियां जगाय रास रच्यो मंडल,
साथ सकल मिलि रमत साकुण्डल।।९।।
जीवन मोक्ष आठ विधा दीन्हीं,
सैंया रतन आरती कीन्हीं।।१०।।

आरती

आनन्द आरती संझा कीजै,
नवल किशोर निरखि सुख लीजै।।१।।
पहली आरती बृज में वासा,
सब सखियन मिलि देख्या तमाशा।।२।।
दूसरी आरती रास में आये,

अक्षार मनोरथ पूरन कराये।।३।।
तीसरी आरती श्याम सुहाये,
सुर असुरन धनी सबहिं मिलाये।।४।।
चौथी आरती बुधाजी मन भाई,
तारतम ज्योति करी रोशनाई।।५।।
पांचवी आरती विजयाभिनंदन,
जागनी लीला कलियुग निकंदन।।६।।
आरती यह श्री महामति गाई,
आशा सखी सुनत सुख पाई।।७।।

आरती

आरती कीजे जय जय अन्त न जाको,
अक्षारातीत नाम निज ताको।।१।।
पूरन ब्रह्म सनातन सोई,
जाकी इच्छा सों सब होई।।२।।
ब्रह्म अनादि आदि नहिं जाकी,
श्रुति स्मृति देत सब साखी।।३।।
अविगति अमर अभय अविनाशी,
त्रिगुन रहित बहु लोक निवासी।।४।।
ब्रह्मा विष्णु निरंजन देवा,
शिव सनकादिक लखें न भेवा।।५।।
नारद शारद सुक मुनि शेषा,
खट दरसन बहु भेख अलेखा।।६।।
साध सिध ऋखि मुनि सब गावें,
अपरम्पार पार नहिं पावें।।७।।
सब्द रहित जो अकथ कहानी,
परमहंस विरले पहचानी।।८।।
परमहंस जो धनी पहचाने,

मन वचन कर्म चित और न जाने।।६।।
परमपुनीत परमपुर रहहीं,
परमहंस जो ये सुख लहहीं।।१०।।
सच्चिदानंद अखंड बिहारी,
साथ सकल है शरण तुम्हारी।।११।।

आरती

आरती कीजै श्रीजी साहेबजी तुम्हारी,
अक्षारातीत तुमहीं गिरधारी।।१।।
तत्व गुणन को थाल बनाये,
मानिक दीवा महाविष्णु धराये।।२।।
गोत्रा पिया के मंगल गाये,
निराकार की ज्योति भराये।।३।।
हीरा नंगन पर परना बसाये,
ब्रह्मसृष्टि आनंद सुख पाये।।४।।
मुकुन्द श्री महामति पिया लखि पाये,
साथ पिया पर वारी वारी जाये ।।५।।

आरती

आरती अंग चतुर्दश केरी,
पांच स्वरूप मिल एक भये री।।१।।
रास चरण प्रकास पिंडुरिया,
खटऋतु घुटन कलश जंघन की।।२।।
सनंध कमर कर किरंतन सोहे,
नाभि खुलासा उदर खिलवत की।।३।।
हृदय तवाफ कण्ठ सागर छबि,
मुख सिनगार नासिका सिंधी।।४।।
श्रवण मारफत नयन सो कयामतनामा,

चौदह अंग मिलि एक धनी के।।५।।
श्री सुन्दर श्री इन्द्रावती जीवन,
प्रेम सखी बलि बलि चरनन की।।६।।

आरती

आरती सच्चिदानन्द जी की कीजे,
निज स्वरूप अपना लखा लीजे।।
मूल मिलावा मन्दिर मांहे, रतन जड़ित सिंहासन जांहे।
मूल स्वरूप चरण चित्त दीजे।।१।।
सखियां प्रेम स्वरूपा सोहें, निरख प्राण पति मन मोहें।
मधुर सिन्धु अमृत रस पीजे।।२।।
कलंगी पगड़ी पटुका जामा, लख लज्जित होय पूरन कामा।
प्रेम मगन आनन्द मन भीजे।।३।।
रतन सखी जुथ के संग आयी, प्रेम आरती साज के लाई।
आरती वार पति पर रीझे।।४।।

आरती

आरती अक्षरातीत की गाइये,
जाको नाम लिये सुख पाइये।
मोह तत्व आदि लों अधःपत होई,
जो उपजे सोतो रहे न कोई।।१।।
अक्षर सोई इच्छा धारी,
इच्छा ते उपजे संसारी।।२।।
जा दर्शन को अक्षर धावे,
सेवा सखी तहाँ सुरत लगावे।।३।।

सद्गुरू स्तुति

जय जय सद्गुरू आरती तेरी,
निर्मल दृष्टि करी जिन मेरी।।१।।

तारतम ज्ञान हाथ कर लीन्हों,
खीर नीर को निर्णय कीन्हों।।२।।
पिंड ब्रह्माण्ड लखाये दोई,
पूरण ब्रह्म बिन और नहीं कोई।।३।।
मोह तत्व उपज्यो है सोई,
जो उपज्यो सो तो रह्यो न कोई।।४।।
बैठे सिंघासन श्री युगल बिहारी,
युगल बिहारी पिया नवल बिहारी।
छबि निरखत श्री महामति बलिहारी।।५।।

आरती उतारने के प्रथम बोलने की स्तुति

पूर्ण ब्रह्म ब्रह्म से न्यारे, आनन्द अखंड अपारे।
शिव सनकादि आदि के इंछित, शेष न पावत पारे।।१।।
अगम जान के निगम कहाये, खोजि खोजि पचि हारे।
जानि के मूल धनी अंगना अपनी, सो घर आये हमारे।।२।।
श्री ठकुराणी जी सखियन सुधा, लीन्हें संग पधारे।
त्रिगुन फांस के फंद परे थे, सो फंदा निरवारे।।३।।
वारी वारी जाऊं मैं अपने पिया पर, शोभा मुखहूं न आवे।
सिंघासन आसन बैठारे, छत्रसाल गुण गावे।।४।।

आरती उतारने की

कंचन थाल चहुं मुख दिवला, दीपक जोत प्रकासी।
करत आरती श्री जियावर रानी, आनंद अंग उलासी।।१।।
जुगल सरूप सुन्दर सुखदायक, श्याम धाम धनी सोहे।
मंगल रसिक बदन की शोभा, निरखंता मन मोहे।।२।।
सखियां निरत करें और गावें, आनंद अखण्ड अपार।
ताल मृदंग झांझ जन्त्र बाजे, सखियां बोलत जै जै कार।।३।।
बधावें मुक्ताफल सखियां, श्री जियावर श्याम सुहागी।

तन मन जीव निछावर कीन्हों, श्री इंद्रावती चरणों लागी।।४।।

परिक्रमा (प्रातः के समान)

नवखण्डों आरती

भई नई रे नवखंडों आरती।
श्री विजयाअभिनंद की आरती, प्रेम मगन होए उतारती।
प्रेम मगन होए उतारती, सखी आप पिया पर वारती, ।।१।।
दुष्टाई सबों की संघारती, सुख अखंड आनंद विस्तारती।
जन सचराचर तारती, भई .....।।२।।
सैयां सब सिनगार साजती, मिने सूरत पिया की विराजती।
ए सोभा इतही छाजती, भई .....।।३।।
झालर अगनित बाजे ले बाजती, ब्रह्मांड में नौबत गाजती।
कलियुग सैन्या सुन भाजती, भई .....।।४।।
सप्तधात सून्य मंडल थाल, निरंजन जोत भई उजाल।
झलहलिया इत नूरजमाल, भई .....।।५।।
पसरी दया प्रगटे दयाल, काटे दुनी के करम जाल।
चैतन व्यापी भए निहाल, भई .....।।६।।
सैन्या सहित आए त्रिपुरार, आए ब्रह्मा पढ़त मुख वेद चार।
विष्णु बोलत बानी जय जय कार, भई .....।।७।।
आए धरमराए और इंद्र वरुन, नारद मुनि गंधर्व चौदे भवन।
सुर असुरों सबों लई सरन, भई .....।।८।।
आए सनकादिक चारों थंभ, लिए खड़े संग विष्णु ब्रह्मांड।
जो ब्रह्म अनभवी भए अखंड, भई .....।।९।।
जिन हद कर दई नवधा भगत, जुदी कर गाई पाई प्रेम जुगत।
यों आए सुक व्यास बड़ी मत, भई .....।।१०।।
आए नवनाथ चौरासी सिध, बरस्या नूर सकल या विध।

इत आए बुध जी ऐसी किध, भई .....।।११।।
आए चारों संप्रदा के साधु जन, चार आश्रम और चार वरन।
चारों खूटों के आए गावते गुन, भई.....।।१२।।
आए गछ चौरासी जो अरहंती, दत्तजी दसनामी जो महंती।
आए करम उपासनी और वेदांती, भई .....।।१३।।
आए खट दरसन खट सास्त्र भेदी, बहत्तर फिरके आए अथरवेदी।
आए सकल कैदी और बेकैदी, भई .....।।१४।।
श्री बुधजी की जोतें कियो प्रकाश, त्रैलोकी को तिमर कियो नास।
लीला खेलें अखंड रास विलास, भई .....।।१५।।
पिया हुकमें गावें महामत, उड़ाए असत थाप्यो सत।
सब पर कलस हुओ आखिरत, भई .....।।१६।।

कोटान कोट दण्डवत् करूं,
कोटान कोट करूं प्रणाम।
कोटान कोट विनती करूं,
बकसु धनी मेरे सुन्दरवर श्यामाजी वर श्याम।।

सरूप

सरूप सुन्दर सनकूल सकोमल,
रूह देखा नैना खोल नूरजमाल।
फेर फेर मेहेबूब आवत हिरदे,
किया किनने तेरा कौल फैल ए हाल।।१।।
जामा जड़ाव जुड़या अंग जुगतें,
चार हारों करी अंमर झलकार।
जगमगे पाग ए जोत जवेर ज्यों,
मीठे मुख नैनों पर जाऊं बलिहार।।२।।
लाल अधुर हंसत मुख हरवटी,

नासिका तिलक निलवट भौंहें केश।
श्रवन भूखन मुख दंत मीठी रसना,
ए देख दरशन आवे जोश आवेश।।३।।
बांहें चूड़ी बाजू बंध सोहे फुमक,
पोहोंची काड़ो कड़ी हस्त कमल मुंदरी।
नख का नूर चीर चढ़या आसमान में,
ज्यों हक चलवन करें सब अंगुरी।।४।।
रोसनी पटुके करी अवकाश में,
चरन भूखन जामें इजार झांई।
कहे महामती मोमिन रूह दिल को,
मासूक खौंचें तोहे अर्श मांहीं।।५।।

श्री श्यामा जी को स्वरूप,
श्री देवचन्द्र जी नाम।
मैं बंदी अवगुण भरी
पिया तुम गुण भरे निदान।।
अर्स दिल को सेजदा करूं ,
वाहेदत को करूं प्रणाम।
समस्त सुन्दरसाथ को कोटान कोट करूं प्रणाम।।

श्री आनंद मंगल श्री धाम धनी जू की जय....।

भोग

कृपा निध सुंदरवर श्यामा, भले भले सुंदरवर श्याम।
उपज्यो सुख संसार में, आए धनी श्री धाम।।१।।
प्रगटे पूरन ब्रह्म सकल में, ब्रह्म सृष्ट सिरदार।
ईश्वरी सृष्ट और जीव भी, सब आए करो दीदार।।२।।

नित नए उछव आनन्द में, होत किरंतन सार।
वैष्णव जो कोई खट दरसन, आए इष्ट आचार।।३।।
भोजन सर्वे भोग लगावत, पांच सात अंन पाक।
मेवा मिठाई अनेक अथाने, विध विध के बहु साक।।४।।
अठारे बरन नर नारी आए, साजे सकल सिनगार।
प्रेम मगन होए गावें पियाजी के, धवल मंगल चार।।५।।
कई गंधर्व गुन गावें बजावें, कई नट नाचन हार।
कई ऋषि मुनि वेद पढ़त हैं, बरतत जय जय कार।।६।।
जब की माया ए भई पैदा, ए लीला न जाहेर कब।
बृज रास और जागनी लीला, ए जो प्रगटी अब।।७।।
चारों तरफों चौदे लोकों, ए सुध हुई सबों पार।
बाजे दुन्दुभि भई जीत सकल में, नेहेचल सुख बेसुमार।।८।।
जोत उद्योत कियो त्रिलोकी, उड़यो मोह तत्व अंधेर।
बरस्यो नूर वतन को, जिन भान्यो उलटो फेर।।९।।
प्रगटे ब्रह्म और ब्रह्मसृष्टि, और ब्रह्म वतन।
महामत इन प्रकाश थे, अखण्ड किये सब जन।।१0।।

भोग

बाईं आंख मेरी बेर बेर फरके, जिया हरखे मेरो भारी।
अनइंछित कलियुग निकंदन, आये श्री नित्यबिहारी।।१।।
कलश पावड़ो ले आरती करूं, चरण पखालों ले झारी।
तन मन जीव निछावर कीन्हों, पूरी है इच्छा हमारी।।२।।
बहु पकवान मिठाई मेवा, भांति अलेखे अथाने।
बनी है रसोई पिया खट्रस रूचि के, थाल संजोय सखी ल्याई।।३।।
भोग लग्यो श्री धाम धनी जी को, हाथ अबीर धुवाऊँ।
बैठारूं सुंदर सेज्या पर, कर कर बीड़ी आरोगाऊँ।।४।।
राखों मैं रसिक रमाय आप गृह, अनतें जान न देऊं।
छत्रसालजी के पियाजी सुंदरवर, अनेक भांति सुख देऊं।।५।।

भोग

आरोगो परमाानन्द प्यारे, नवल किशोरी संगी रे।
सजि कर थाल लाडली ल्याई, नागर नवले रंगी रे।।१।।
रस पकवान पाक पूरण विध, मेवा मधुर मिठाई।
हँसि हँसि के मुख देत परस्पर, रूप युगल सुखदाई।।२।।
पापड़ पूड़ी पेड़ा कचौरी, खीर खांड घृत लीन्हों।
लेत देत दोऊ लाल लाड़ली, रूचि रूचि के रंग भीनों।।३।।
खोवा खांड मुरब्बा मिश्री, व्यंजन विध विध अथाने।
आरोगो प्रीतम धनी मेरे, नये नये स्वाद बखाने।।४।।
दूध भात ऊपर आरोगो, श्री जमुना जल लीन्हों।
या समे के सुख क्यों कहूँ सजनी, पिउ पुरूषोत्तम दीन्हों।।५।।
सजि बीड़ी केसर आरोगाऊँ, भोम चौथी पिउ आये।
श्री इन्द्रावती पति के नित आगे, निरत नवरंग गाये।।६।।

भोग

आज आनन्द अंग न माय रे सैंयां, मारो वाला जी घेर आव्या।
श्री जमुना जल लई करीने, मारा वाला ने स्नान कराव्या।।१।।
आरोगो वाला साकर माखन, सिंघासन पधराव्या।
श्री इन्द्रावती पति रूप युगल पिया, नवरंग ने मन भाव्या।।२।।

भोग

श्रीजू छत्रसाल के आये, श्री बाईजी संग सुहाये।
सखी जान साकुण्डल प्यारी, जाके आये श्रीनित्य बिहारी।।१।।
अपने घर ले पधराये, बहु भांतन कलश धराये।
सिर सरस पांवड़े डारे, जब भीतर भवन पधारे।।२।।
जल युगल चरण रस धोये, तहां मोतिन चौक संजोये।
ले युगल तखत बैठाये, बस्तर भूखन पहराये।।3।।
करि प्रणाम निछावर प्यारी, ले आरती अगर उतारी।
खट् रस बहु भांति बनाये, नाना विध के भोग लगाये।।४।।

रस मूंग भात घृत आने, पय सकर दधि अथाने।
वरे माड़े बरी मुगौरी, कढ़ी पापर विविध कचौरी।।५।।
पकवान रसाज बनाई, बहु भाँतन मधुर मिठाई।
कई विध विध के शाक समारे, जल लेत बीच में प्यारे।।६।।
पिया जेंवत अतिरुचि मानी, पीछे पापड़ बहुत बखानी।
आरोग पलंग पिउ आये, साकुण्डल हाथ धुवाये।।७।।
करी बीड़ी करन खवाये, पग बार बार सिर नाये।
अंग जान सनातन कीन्हों, निज राज आपनो दीन्हों।।८।।

भोग

प्यारी प्रेम लुभानी, पिया जी परम सुख दीजिये।
सुंदर सेज्या समारूं, हेम जड़ित नंग नूरभरी।।१।।
तापर पिया जी बैठारूं, श्री श्यामा जी संग सुहाये।
आज्ञा जो मैं पाऊं, तो भोजन विविध बनाये।।२।।
रुचि थाल सम्हारूं, मूंग जो भात फुलकियां।
घृत पाक मिठाई, खुर्मा जलेबी लाडुवा।।३।।
दूध दधिया ले आई, शाक अनेक कटोरियां।
लाई सकल सामग्री, आन धरे पिया पावहीं।।४।।
पावे पिया प्यारी, जीमें सच्चिदानंद गारी, सबे सखी गावहीं।
श्री जमुना जल अचवन, पान सुगन्ध विशेषिये।।५।।
लाड़बाई की सेज्या, आज राज इतहीं रहें।
चापों चरण पिया के, कर सों बिजन डोलाईये।।६।।
गुहि गुहि हार फूलन के, सो पिया को पहेराइये।
हंसि बोले हैं प्रीतम, नैन सों सैन मिलाइये।।७।।
उनको सुख दीजे और सबे सुख लीजिये।
सुख सेज्या बखानों, अक्षर ब्रह्म जाने नहीं।।८।।
ब्रह्मा विष्णु महेशा, नारद शारद इतहीं रहे।
माया उरझाने सुर नर मुनि जेते भये।।९।।

काहू प्रेम न जान्यो, बसत गोपियन के हिये।
सद्गुरू इत आये, श्री तारतम लिये हाथ में।।१०।।
खोलि पार लखाये, ब्रह्मसृष्टि के कारणे।
जागे सोई पावे, मुकन्द सखी सुख पाइया।।११।।

भोग

नंगन जड़ित चौकी पर दोऊ, श्री युगल स्वरूप विराजे।
धरो है थाल आगे हित चित सों, षट् रस व्यंजन साजे।।१।।
जेंवत जुगल जोड़ी सुख पावत, अचवाऊं जल झारी।
लेत पान पावत हित चितसों, हिरदे सों हितकारी।।२।।
कोटि जतन ब्रह्मा कर थाके, सो जूठन नहिं पाये।
सो जूठन धनी सहज कृपा से, पंचम निशदिन पाये।।३।।

भोग

आवत आज सखी मन मोहन, सुनि मेरो जिया हर्षाये।
तोरन बन्धन बांधे भवन में, मोतियन चौक पुराये।।१।।
प्रेम पाँवड़ो मैं डारूं पियाजी को, सखियन सहित गृह आये।
मूंग भात घृत पूड़ी कचौड़ी, व्यंजन जो मन भाये।।२।।
जेंवत रसिक मनोहर दोऊ, श्री जमुना जल अचवाये।
ले बीड़ी पिया सेज पधारे, ज्ञान सखी सुख पाये।।३।।

भोग

केसर बाई के मोहोल पधारे, चरण पखालों ले झारी।
नूर की चौकी मैं डारूं मन्दिर में, ता पर श्यामावर आये।।१।।
लाड़ बाई जी थाल ले आई, पकवान बहुत बनाई।
जेंवत युगल जोड़ी सुख पावत, श्री इन्द्रावती चंवर डोलाई।।२।।
बाई साकुण्डल हाथ धुवाये, सखियन पान खवाये।
उठि के जियावर आये तखत पर, श्री श्यामा जी संग सुहाये।।३।।
कृपा सिंधु दया करी मुझ पर, श्री प्राणनाथ पति पाये।
परमहंस प्रणाम करत, सब साथ को शीश नमाये।।४।।

भोग

पिया रंग रंगीले, रंग मोहोल मेरे आये जू।
संग साथ रंगीलो, दुलहिन संग ले आये जू।।१।।
सिनगार कराय के, सिंघासन पधराये जू।
आरती परिकरमा, कर कर फूल वर्षाये जू।।२।।
चरणों धिसि माथे, पग उर नैन लगाये जू।
अति प्रेम आनन्द सों, छप्पन भोग बनाये जू।।३।।
बहु शाक अथाने, मेवा मधुर मिठाई जू।
दधि दूध मलाई, मिश्री अधिक मिलाई जू।।४।।
पावें पिया प्यारी, सुन्दरसाथ सुहाये जू।
पूरन होय पावें, सब के चित की चाहे जू।।५।।
अचवन कर पिया जी को, बीड़ी तो दोऊ आरोगाये जू।
पीछे बीड़ी सबन को, सुन्दरसाथ खवाये जू।।६।।
दिये सुख सबन को, दंपति दोऊ हर्षाये जू।
पीछे फूलन की सेज्या, जुगल जीवन पधराये जू।।७।।

भोग

आये श्री राज श्यामा जी मिल के, क्या मेजबानी कीजे।
दीन दुनी सब इस जगत के, रूह कुरबानी कीजे।।१।।
कदम धोय कर आबे हैयाती, भर भर प्याले पीजे।
पाक तखत बैठाए सजन को, दिल दीदों छबि लीजे।।२।।
मेहर मुकट सिनगार मेहर के, देख देख रूहें भीजे।
अत्तर उंदक कपूर आरती, ऊपर गुलवर कीजे।।३।।
देय तवाफ गिरदवाए तखत के, अर्ज खाने की कीजे।
मेवा मिसरी मधुर मिठाई, जियावर भोजन कीजे।।४।।
खटरस व्यंजन सकल अथाने, और दूध दधि लीजे।
मधुर अमृत हौज अर्स के, सो जल अचवन कीजे।।५।।
मुख बीड़ी आरोगाये पान की, साहेब अर्ज सुनी लीजे।

मोमिन को तुम कियो है सिफायत, अब बुत कायम कीजे।।६।।

भोग

जेंवन आये श्रीराज, महाराज भवन में।
दीन दयाल अचल सुखदायक, ब्रह्मसृष्टि सिरताज।
नाम श्रीमहामति आये पद्मावती, सखियाँ जगावने काज।।१।।
ले सिर पाग पांवड़ो कीन्हो, छकि रहे सकल समाज।
कनक सिंघासन आसन ऊपर, वसन भूखन सब साज।।२।।
तन मन धन ले न्योछावर कीन्हों, लौकिक लोपानो लाज।
दूध दधि और माखन मिश्री, वनफल अनेक इलाज।।३।।
बहु पकवान मिठाई मेवा, शाक पाक घृत ताज।
जेंवत जुगल जोड़ी सुख पावत, साहेब गरीब निवाज।।४।।
अचवन करि मुख पान सुवासित, सतगुरू सत्य जहाज।
मोहन सखी पिया सब विध पूरन, धन धन इत उत आज।।५।।

शयन आरती

नृत्य कृष्ण पक्ष का

निरत होत चौथी भोम में, जित मोहोल बन्यो विसाल।
चौक मध्य अति सुन्दर, क्यों कहूं मन्दिर द्वार।।१।।
तीनों तरफों मन्दिर, आगूं दो दो थंभों की हार।
बड़ा मोहोल अति सोभित, सुन्दर अति सुखकार।।२।।
थंभ द्वार अति सोभित, तरफ तीनों साठ मन्दिर।
बीस बीस हर तरफों, चौक बैठक अति अन्दर।।३।।
द्वार सोभित कमाड़ियों, साठों करें झलकार।
और जोत थंभन की, सुख कहूं जो होए सुमार।।४।।
पीठ पीछे जो मन्दिर, कई रंग सेत दिवाल।
दाहिनी तरफ लाखी मन्दिर, क्यों कहूं नकस मिसाल।।५।।
बांई तरफ दिवाल जो, मन्दिर लिबोई रंग।
बेल नकस कटाव कई, सो केते कहूं तरंग।।६।।

हरी दिवाल जो मन्दिर, सो सामी है नेक दूर।
चारों तरफों अर्स जवेर, करे जंग नूर सों नूर।।७।।
एह ठौर है निरत की, सो केता कहूं मजकूर।
चारों तरफों ऊपर तले, कहूं मावत नहीं जहूर।।८।।
श्री राज श्यामा जी बीच में, बैठक सिंघासन।
रूहें बारे हजार को, हक देत सुख सबन।।९।।
कई विध के बाजे बजें, नवरंग बाई नाचत।
हाथ पांउं अंग बालत, कही न जाए सिफत।।१०।।
ले बाजे रूहें खड़ी, मृदंग जंत्र ताल।
रंग रबाब चंग तंबूरा, बोलत बेन रसाल।।११।।
पांउं झांझर घूंघर बोलहीं, कांबी कड़लो बाजत।
याही तरह अनवट बिछुआ, संग लिए गाजत।।१२।।
हाथ कंकन नंग नवघरी, स्वर एकै रस पूरत।
और भूखन सबों अंगों, सोभित सब सूरत।।१३।।
जिन विध पांउं चलावहीं, सोई भूखन बोलत।
जो बजावें झांझरी, तो घूंघरी कोई ना चलत।।१४।।
जो बोलावत घूंघरी, तो नहीं झांझरी बान।
जो सबे बोलावत, तो बोलें सब समान।।१५।।
प्रेम रसायन गावत, अति प्यारी मीठी बान।
याही विध हस्त देखावहीं, फेर फेर देत हैं तान।।१६।।
कई जुदे जुदे बोलें भूखन, सब बाजे मिलावत संग।
एक रस सब गावत, नवरंग बाई के रंग।।१७।।
हाथ धारत मृदंग पर, जब अव्वल स्वर करत।
निरत करें कई विध सों, कई गुन कला ठेकत।।१८।।
कई गत भांत रंग ल्यावत, ए तो कामिल निरत कमाल।
इन छेक बालन की क्यों कहूं, जो देखत नूरजमाल।।१९।।
कई विध कहूं बाजंत्र की, कई विध नट नाचत।

कई विध की फेरी कहूं, कई रंग रस गावत।।२०।।
नामै जाको नवरंग, ताकी निरत कहूं क्यों कर।
अनेक गुन रंग ल्यावहीं, नए नए दिल धर।।२१।।
मुरली बजावत मोरबाई, बेनबाई बाजंत्र।
तान बाई तान मिलावत, निरत जामत इन पर।।२२।।
कंठ केलबाई अलापत, स्वर पूरत बाईसें न।
सब मिल गावें एक रस, मुख बानी मीठी बैन।।२३।।
झरमर बाई बजावत, माहें झरमरी अमृती।
कई बाजे कई रंग रस, ए रंग अलेखे कहूं केती।।२४।।
खाड़ियां रूहें निरत में, इत उछरंग होत।
तरफ चारों जवेरन में, निरत देखें अधिक जोत।।२५।।
निरत कला सब नाच के, फेर फेर देत पड़ताल।
यों स्वर मीठे मोहोलन के, चलत आगूं मिसाल।।२६।।
ऐसे ही प्रतिबिंब इनके, मोहोल बोलें कई और।
बानी बाजे निरत अवाजे, होत निरत कई ठौर।।२७।।
साम सामी पशु पंखी नंग के, जंग करें जवेरों दोए।
एक ठौर निरत नाचत, ठौर ठौर सामी होए।।२८।।
यों सब ठौर जंग अर्स में, कहूं केती विध किन।
अपार अखाड़े सब दिसों, होत सब में रोसन।।२९।।
ए रूह की आंखों देखिए, असल बका के तन।
तो देखो चित्रामन धाम की, करत निरत सबन।।३०।।
एह खोल एक पोहोर लग, होत हमेसां इत।
पंद्रा दिन जब घर रहें, तब देखें दुलहा निरत।।३१।।
महेबूब को रिझावने, अनेक कला साधात।
और नजर ना कर सकें, बंध ऐसे ही बांधत।।३२।।
थंभ दिवालें सिंघासन, सब में होत निरत।
इन समें पशु पंखी चित्रामन के, सब ठौरों केलि करत।।३३।।

बोहोत बातें बीच अर्स के, किन विध कहूं इन मुख।
जो बैठी इन मेले मिने, सोई जाने ए सुख।।३४।।
ऐसी चारों तरफों कई बैठकें, अन्दर या गिरदवाए।
ए सुख अखंड अर्स के, क्यों कर कहे जांए।।३५।।

नृत्य शुक्ल पक्ष का

वाला तमे निरत करो मारा नाहोजी रे, अमने जोयानी खांत।
साथ जोई आनंदियो रे, कांई वेख देखी एक भांत।।१।।
तमे निरत करो रे भामनी, निरत रूडी थाय नार।
तमे वचन गाओ प्रेमना, पासे स्वर पूरूं रसाल।।२।।
सुणो सुंदर वल्लभ जी मारा, निरत केणी पेरे थाय।
अमने देखाडो आयत करी, कांई उलट अंग न माय।।३।।
जेणी सनंधो पांउं भरो, अने अंग वालो नरम।
भमरी फरो जेणी भांत सुं, अमे नाचूं फरूं तेम।।४।।
हस्त करी देखाडिए, अने ठमके दीजे पाय।
वचन गाइए प्रेमनां, कांई तेना अरथज थाय।।५।।
कंठ करीने राग अलापिए, कांई स्वर पूरे सकल साथ।
वेण वेणा रबाब सों, कांई ताल बाजे पखाज।।६।।
करतालमां बाजे झरमरी, कांई श्री मंडल हाथ।
चंग तम्बूरे रंग मले, वालो नाचे सकल साथ।।७।।
भूखण बाजे भली भांत सुं, धरती करे धमकार।
शब्द उठे सोहांमणा, उछरंग वाध्यो अपार।।८।।
निरत करी नरम अंग सुं, कांई फेरी फर्या एक पाय।
छेक वाले छेलाई सुं, तत्ता थेई थेई थाय।।९।।
एक पोहोर आनन्द भरी, कांई रंग भर रमिया एह।
साथ सकल मां वालेजी ए, रमतां कीधो सनेह।।१०।।
आनन्द घणो इन्द्रावती, मारा वालाजीने लागे पाए।
अवसर छे कांई अति घणो, वाला रासनी रामत माहें।।११।।

ते सर्वे चित धारी, अमसूं रमो अति रंग।
कहे इन्द्रावती साथने, रमवानी घणी उमंग।।१२।।

आरती उतारने से पहले पूर्ण ब्रह्म बोलना है–

आरती

आरती करूं मारा वाला जी ने केरी,
मारे हैयड़े ते हरख्या न माय।।१।।
मारा वाला, आगल ताल मृदंग झांझ जन्त्र बाजें,
सखियां निरत करें और गावें।।२।।
मारा वाला जी ने सुंदर वदन सुहामणों,
कांई शोभानो नहिं पार।।३।।
सखियां कहे मारा वालाजीने ऊपर,
तन मन जीव करूं बलिहार।।४।।
सुन्दर स्वरूप जुगल दोऊ ऊपर,
श्री महामति जाये बलिहार।।५।।

मध्य रात्रि का स्वरूप (कृष्ण पक्ष)

श्री राज श्री ठकुराणी जी, तीसरी भोम के नीले पीले मंदिर से पौढ़े से उठे तखत पर विराजमान भये। पोहोर दिन पिछला बाकी रह्यो। आपन सब सखियाँ आये आये के कोई बट पीपल की चौकी से, कोई फूलबाग से, कोई नूरबाग से, कोई लाल चबूतरा से, कोई खड़ोकली से, कोई ताड़वन से, कोई ताड़वन के हिंडोले से, कोई बड़ोवन से, कोई मधुवन से, कोई महावन से, कोई पुखराज से, कोई पुखराज की तरहटी से, कोई बंगलों से, कोई श्रीजमुनाजी के सातों घाट से, कोई कुंजवन से, कोई कुंजवन की रेती से, कोई हौजकोसर तालाब से, कोई हौजकोसर के टापू से, कोई

पश्चिम की चौगान से, कोई श्री निजधाम नव भोम दशमी आकासी से, बारे हजार चालीस जुत्थ सब सखियाँ आये आये के, श्री राज श्री ठकुराणी जी के चरणों लागीं। छठी भोम के सुन्दर सुखपाल, तरह जिनकी तखतरवा की, इच्छा स्वरूपी नूर के सुन्दर सुखपाल, तीसरी भोम के झरोखों में आय मुकाबिल भये। एक सुखपाल में श्रीराज श्रीठकुराणीजी विराजमान भये। एक–एक सुखपाल में दो–दो सखियाँ, जोड़े–जोड़े अन्तरिक्ष इच्छाचारी, मनवेगी नूर के सुंदर सुखपाल, श्रीअक्षरातीत की आसमान में सवारी छाय रही। कोई सुखपाल श्रीराज श्रीठकुराणीजी के दाहिनी तरफ, कोई सुखपाल श्रीराज श्रीठकुराणीजी के बांई तरफ, कोई आगे, कोई पीछे, चारों तरफों नूर के सुंदर सुखपाल चले जाते हैं। कई हजारों लाखों करोड़ों खूब–खुसाली खिलौने खेल करते चले जाते हैं। कई हजारों लाखों करोड़ों वानर बाजे बजावते, नगारे निसान लिये चले जाते हैं। कई हजारों लाखों करोड़ों जमीन के पशु–पंखी जमीन पर, आसमान के पशु–पंखी आसमान पर। कोई राज राज करते। कोई धनी धनी करते। धनी के गुण गावते, रिझावते, छड़ी फिरावते, हुकम जमाते चले जाते हैं। अक्षरातीत की तमाम सवारी, आसमान में भराय रही। आज श्री राज श्री ठकुराणी जी साथ समस्त को ले के पाट के घाट पधारे। तहां छः घड़ी लों साथ रमे खेलें, बाकी दो घड़ी दिन रह्यो। एक घड़ी में झीलना किये, एक घड़ी में सिनगार किये। सुन्दर श्री ठकुराणी जी को सिनगार – सेंदुरिया रंग जड़ाव की साड़ी, श्याम रंग जड़ाव की कंचुकी, नीली लाही को चरणिया। सुन्दर श्री राज जी को सिनगार – सेंदुरिया रंग जड़ाव को चीरा, आसमानी रंग जड़ाव की पिछौड़ी, नीलो न पीलो बीच के रंग को पटुका,

केसरिया रंग जड़ाव को इजार, सुपेत रंग जड़ाव को जामा। श्री युगल स्वरूप नख शिख लों सिनगार साजि के, सायंकाल के समय सुखपाल में विराजमान भये। सुखपाल श्री निजधाम की तरफ को चलाये। बन की खूबी देखते दिखलावते, आसमान की खूबी तमासा देखते दिखलावते, सुखपाल आय आय के चांदनी चौक में उतारे। सुखपालों को आज्ञा दई, छठी भोम के दहेलान में पधारे। पशु पंखीयन को आज्ञा दई बड़े बन के विखे पधारे। खूब खुसालियन को आज्ञा दई बंगलों के विखे पधारे। आप श्री युगल स्वरूप साथ समस्त को ले के भोम भरे की सीढ़ियां चढ़ के। धाम दरवाजे में होय के, अठाईस थंभ के चौक में होय के, रसोई की हवेली में विराजमान भये। तहां नाना प्रकार के मेवा मिठाई आरोग के, श्री जमुना जल चुल्लू कर पानों की बीड़ा लिये। साथ समस्त मेवा मिठाई आरोग के, श्री जमुना जल चुल्लू कर पानों की बीड़ा लिये। हँसते, खेलते, श्याम, श्वेत के बीच में सुन्दर सीढ़ियां शोभित, बहुत साथ इत आय के, चढ़ उतर करत। चढ़त दादरे प्रथम भोम से दूसरी भोम, दूसरी भोम से तीसरी भोम, तीसरी भोम से चौथी भोम। तहां निरत की बाखर में नवरंग बाई ने निरत को बागो पहेरयो। श्याम रंग जड़ाव की साड़ी, आमरस मानिन्द कंचुकी। पांच पटे की चरणिया, सर्व सोलह सिनगार साजि के अपनी जुत्थ मिलाये, बाजंत्र मिलाये, सप्त स्वरनसों नृत्य आरम्भ कियो। षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत, निषाद, इन सप्त स्वरनसों गाई। श्री राज श्री ठकुराणी जी, पोहोर रात लों नवरंग बाई की नृत्य देखे। ता पीछे चढ़त दादरे पांचवी भोम मध्य परवाली रंग मन्दिर में सुन्दर नूर की चौकी पर चारों चरण जोड़े धर के, सुंदर सुख सेज्या पर विराजमान होये पौढ़े। आपन सब सखियां आये आये के, श्री राज जी श्री ठकुराणी

जी के चरणों, लाग लाग के, श्री राज श्री ठकुराणी जी को स्वरूप हिरदे में ले के, सखियां सब आप अपने मंदिरों पधारीं। श्री राज जी सबों मंदिरों में पधारे। होत सेज्या नित्य बिहारे। यह दोऊ स्वरूप चित के विखे राखिए, इन चरणों बेर बेर लागिये।।

मध्य रात्रि का स्वरूप (शुक्ल पक्ष)

श्रीराज श्रीठकुराणीजी, तीसरी भोम के नीले पीले मंदिर से पौढ़े से उठे तखत पर विराजमान भये। पोहोर दिन पीछला बाकी रह्यो। आपन सब सखियाँ आये आये के कोई बट पीपल की चौकी से, कोई फूलबाग से, कोई नूरबाग से, कोई लाल चबूतरा से, कोई खड़ोकली से, कोई ताड़वन से, कोई ताड़वन के हिंडोले से, कोई बड़ेवन से, कोई मधुवन से, कोई महावन से, कोई पुखराज से, कोई पुखराज की तरहटी से, कोई बंगलों से, कोई श्रीजमुनाजी के सातों घाटों से, कोई कुंजवन से, कोई कुंजवन की रेती से, कोई हौजकोसर तालाब से, कोई हौजकोसर के टापू से, कोई पश्चिम की चौगान से, कोई श्रीनिजधाम नव भोम दसमी आकासी से, बारे हजार चालीस जुत्थ सब सखियाँ आये आये के, श्रीराज श्रीठकुराणीजी के चरणों लागीं। छट्ठी भोम के सुन्दर सुखपाल, तरह जिनकी तखतरवा की इच्छा स्वरूपी नूर के सुन्दर सुखपाल, तीसरी भोम के झरोखों में आये मुकाबिल भये। एक सुखपाल में श्रीराज श्रीठकुराणीजी विराजमान भये। एक–एक सुखपाल में दो–दो सखियाँ, जोड़े–जोड़े अन्तरिक्ष इच्छाचारी, मनवेगी नूर के सुंदर सुखपाल, श्री अक्षरातीत की आसमान में सवारी छाये रही। कोई सुखपाल श्रीराज श्रीठकुराणीजी के दाहिनी तरफ, कोई सुखपाल श्रीराज श्रीठकुराणीजी के बांई तरफ, कोई आगे,

कोई पीछे, चारों तरफों नूर के सुंदर सुखपाल चले जाते हैं। कई हजारों लाखों करोड़ों खूब–खुसाली खेल खिलौने खेल करते चले जाते हैं। कई हजारों लाखों करोड़ों बानर बाजे बजावते, नगारे निसान लिये चले जाते हैं। कई हजारों लाखों करोड़ों जमीन के पशु–पंखी जमीन पर, आसमान के पशु–पंखी आसमान पर, कोई राज राज करते। कोई धनी धनी करते, धनी के गुण गावते, रिझावते छड़ी फिरावते, हुकम जमावतें चले जाते हैं। अक्षरातीत की तमाम सवारी आसमान में भराय रही, आज श्री राज श्री ठकुराणी जी साथ समस्त को ले के जहाँ इच्छा हुई तहाँ पधारे, तहां छः घड़ी लों साथ रमे खेले, बाकी दो घड़ी दिन रह्यो। एक घड़ी में झीलना किये, एक घड़ी में सिनगार किये। सुन्दर श्री ठकुराणी जी को सिनगार, सेंदुरिया रंग जड़ाव की साड़ी, श्याम रंग जड़ाव की कंचुकी, नीली लाहे को चरणिया। सुन्दर श्री राज जी को सिनगार– सेंदुरिया रंग जड़ाव को चीरा, आसमानी रंग जड़ाव की पिछौरी, नीलो न पीलो बीच के रंग को पटुका, केसरिया रंग जड़ाव को इजार, सुपेत रंग जड़ाव को जामा श्री युगल स्वरूप साथ सब नख सिख लों सिनगार साजि के, पोहोर रात्रि लों बन में रमे खेले रामतें करी, तहां नाना प्रकार के मेवा मिठाई आरोग के, श्रीजमुना जल चुल्लू कर, पानों के बीड़ी लिये। सुंदर सुखपाल में विराजमान भये। सुखपाल श्री निजधाम की तरफ को चलाये, बन की खूबी देखते दिखलावते, आसमान की खूबी तमाशा देखते दिखलावते, सुखपाल आय आय के पांचमी भोम के झरोखों में उतारे। सुखपालों को आज्ञा दई, छठी भोम के देहेलान में पधारे, पशु पंखियों को आज्ञा दई, बड़े बन के विखे पधारे। खूब खुसालियन को आज्ञा दई,

बंगलों के विषे पधारे। आप श्री युगल स्वरूप साथ समस्त को ले के पांचवी भोम मध्य परवाली रंग मंदिर में पधारे, तहाँ सुन्दर नूर की चौकी पर चारों चरण धर के सुंदर सुख सेज्या पर विराजमान होय पौढ़े। आपन सब सखियां आये आये के श्री राज श्री ठकुराणी जी के चरणों लाग लाग के श्री राज श्री ठकुराणी जी को स्वरूप हिरदे में ले के, सखियां सब आप अपने मंदिरों पधारी। श्री राज जी सब मंदिरों में पधारे। होत सेज्या नित बिहारे। यह स्वरूप चित के विषे राखिये, इन चरणों बेर बेर लागिये।।

संझा को अवसर (कृष्ण पक्ष)

हुओ संझा को अवसर, राज श्यामाजी बैठे सिनगार कर।।१।।
मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजी के आगे धावें।
उच्छरंगतियाँ आवें आगे, राज श्यामाजी के पाउं लागें।।२।।
पंद्रा दिन खेलें बन, पंद्रा दिन सुख भवन।
अब कहूं भवन को सुख, जो श्री धनी जी कह्यो आप मुख।।३।।
बनथें आये सिनगार कर, संझा तले भोम मंदिर।
आरोग चढ़े भोम चौथी, खेलें नवरंगबाई की जुत्थी।।४।।
निरत करे नवरंगबाई, पासे कई विध बाजे बजाई।
निरत करें और गावें, पासे सखियां स्वर पुरावें।।५।।
कर भूखन बाजे चरन, ताकी पड़ताल परे सब धरन।
पांऊं ऐसी कला कोई साजे, सबमें एक घूंघरी बाजे।।६।।
जब दोए रे दोए बोलावें, तब तैसे ही पांउं चलावें।
तीन कहें तो बाजे तीन, चार बाजे कला सब लीन।।७।।
जो बोलावें झांझरी एक, जानों एही खेल विसेक।
जिनको रे बोलावत जैसे, सो तो बोलत भूखन तैसे।।८।।
जब बोलावें सर्वा अंगे, भूखन बोले सबें एक संगे।
जब जुदे जुदे स्वर बोलावें, छब जुदी सबों की सोहावे।।९।।

भूखन करत जुदे जुदे गान, मुख बाजे करें एक तान।
क्यों कर कहूं ऐ निरत, सोई जाने जो हिरदे धरत।।१०।।
अनेक स्वरों बाजे बाजें, पड़छंदे भोम सब गाजें।
सुंदरियां सोभा साजें, सो तो धनीजी के आगे बिराजे।।११।।
निरत भूखन बाजे गान, देखो ठौर सैयां सब समान।
इन लीला में आयो चित्त, छोड़यो जाए न काहूं कित।।१२।।
छुटकायो भी ना छूटे, तो आतम दृष्ट कैसे टूटे।
इत बोहोत लीला कहूं केती, सोई जाने लगी जाए जेती।।१३।।
थंभों दीवालों नंगों तेज जोत, जानों निरत सबों ठौर होत।
पिया पीछल मन्दिर सेत दिवाल, तामें कई रंग नंग विसाल।।१४।।
दाहिने हाथ मंदिर रंग लाखी, कई कटाव दिवाल दिल साखी।
बांई तरफ पीली जो दिवाल, माहें श्याम सेत रंग लाल।।१५।।
सामे नीला मंदिर झलकत, साम सामी किरना लरत।
रह्या नूर नजरों बरस, जुबां क्या कहे धनी को रंग रस।।१६।।
पोहोर रैनी लगे जो खेलावें, पीछे मुख आज्ञा करके बोलावें।
इतहीं थें आज्ञा करी, पांउं लाग सेज्या दिल धरी।।१७।।
दई आज्ञा सबों बड़भागी, आइयां मंदिर चरनों लागी।
श्रीराजश्यामाजी सेज्या पधारे, कोई कोई वस्तर भूखन वधारे।।१८।।
ए मन्दिर रंग परवाली, सो मैं क्या कहूं ताकी लाली।
माहें अनेक रंगों की जोत, सो मैं कही ना जाए उद्दोत।।१९।।
पीछल बीसक पिउ पासे रहियां, सो भी आइयां घरों सब सैयां।
पिउजी सबों मंदिरों पधारे, होत सेज्या नित विहारे।।२०।।
अब क्यों रे कहूं प्रेम इतको, सुख लेवें चाह्यो चित को।
सुख लेवें सारी रात, सुख लेवें सारी रात।।२१।।
रस प्रेम सरूप है चित, कई विध रंग खेलत।
बुध जाग्रत ले जगावती, सुख मूल वतन देखावती।।२२।।
प्रेम सागर पूर चलावती, संग सैयों को भी पिलावती।
पियाजी कहें इंद्रावती, तेज तारतम जोत करावती।।२३।।

तासों महामत प्रेम ले तौलती, तिनसों धाम दरवाजा खोलती।
सैयां जाने धाम में पैठियां, ए तो घर ही में जाग बैठियां।।२४।।

संझा को अवसर (शुक्ल पक्ष)

हुओ संझा को अवसर, राजश्यामाजी बैठे सिनगार कर।।१।।
मिनों मिने सिनगार करावें, एक दूजी के आगे धावें।
उच्छरंगतियाँ आवें आगे, राजश्यामाजी के पाउं लागें।।२।।
पांउं लाग के पीछियां फिरें, खेल चित चाह्या त्यों करें।
कई रंग फूले फूल बास, लेत नए नए बन के विलास।।३।।
ससि बन याही जोत तेज, सब तत्व तेज रेजा रैज।
करें खेल अति उछरंग, तामें कबूं कबूं पियाजी के संग।।४।।
इत कई विध मेवा आरोगें, बनहीं को लेवें विभोगें।
इत नित विलास विसाल, पीछे आये बैठे सुखपाल।।५।।
इत हुई पोहोर एक रात, सुखपाल चलावें चित चाहत।
घरों आये सुखपाल सारे, राजस्यामाजी पांचवी भोम पधारे।।६।।
इतहीं थें आज्ञा करी, पांउं लाग सेज्या दिल धरी।।७।।
दई आज्ञा सबों बड़भागी, आइयां मंदिर चरनों लागी।
श्रीराजश्यामाजी सेज्या पधारे, कोई कोई वस्तर भूखन वधारे।।८।।
ए मन्दिर रंग परवाली, सो मैं क्या कहूं ताकी लाली।
माहें अनेक रंगों की जोत, सो मैं कही न जाए उद्दोत।।९।।
पीछल बीसक पिउ पासे रहियां, सो भी आइयां घरों सब सैयां।
पिउजी सबों मंदिरों पधारे, होत सेज्या नित विहारे।।१०।।
अब क्यों रे कहूं प्रेम इतको, सुख लेवें चाह्यो चित को।
सुख लेवें सारी रात, सुख लेवें सारी रात।।११।।
रस प्रेम सरूप है चित, कई विध रंग खोलत।
बुध जाग्रत ले जगावती, सुख मूल वतन देखावती।।१२।।
प्रेम सागर पूर चलावती, संग सैयों को भी पिलावती।

पियाजी कहें इंद्रावती, तेज तारतम जोत करावती।।१३।।
तासों महामत प्रेम ले तौलती, तिनसों धाम दरवाजा खोलती।
सैयां जाने धाम में पैठियां, ए तो घर ही में जाग बैठियां।।१४।

पौढ़ावनी

पौढ़ो श्री राज अवार भई है।
सेज समारी दोय पलंग की,
आधी ऊपर रैन गई है।।१।।
श्री जी हेत सों वचन सुनावत,
धाम स्वाद में रूह रही है।
साथ श्रवण महाराज सुनत हैं,
सबकी रूह मगन भई है।।२।।
अर्ज करत मुस्काये लाडली,
पिया हैरत लखि बात लई है।
उठि पिया चाल चलत रंग भीने,
सबहिं समाज को सीख दई है।।३।।
पिया धारत पग सेज सुरंगी,
सब सखियन को बात कही है।
अपने अपने मंदिर पधारो,
भोम पांचमी रतनमयी है।।४।।
बंगले श्री राज हिंड़ोले पौढ़त,
धन उन भाग जो सेवा में रही है।
कृष्ण सखी नित्य चरण सोहरावत,
दिन दिन बाढ़त प्रीति नई है।५।।

पौढ़ावनी

मदन मोहन श्याम, पौढ़ो पिया मदन मोहन श्याम।
आनन्द होय चरणारबिंद भजो, सकल पूरण काम।।१।।
अष्ट सिद्धि नव निध द्वारे, राज भोग विश्राम।

उमापति शुकदेव नारद, रटत निस दिन नाम।।२।।
सकल कला प्रवीण मोहन, संग श्यामा जी श्याम।
कहत कृष्ण सखी गिरधर, अखंड है परमधाम।।३।।

पौढ़ावनी

पधारो मेरे वाला जी, रंग भरी रैन।
चुन चुन कलियां मैं सेज बिछाऊं,
सब अंगो सुख देन।।१।।
लटक मटक पिया चाल चलत हैं,
ठुमक ठुमक पग देन।।२।
कब की खड़ी मैं अर्ज करत हूं,
क्यों न सुनो मेरे बैन।।३।।
ऐहेल सखी अब देर न कीजे,
चरण कमल चित देन।।४।।

पौढ़ावनी

हेली सेजड़ी रे बिछाई, मिलि आशावन्ती जुत्थ आई।
कुसुम अनंत सो रची है सेजड़ी, तापर पिया अलसाई।।१।।
नैन की सैन किये नागर दोऊ, रुचि रुचि सेज बिछाई।।२।।
निरतत नवल प्रेम रस भीने, पिया निरखे ललचाई।।३।।
मोहन रसिक उठे रसरीते, दम्पति दोऊ लपटाई।।४।।
श्री सुन्दर श्री जीवन पौढ़े, नवरंग रसिक गुण गाई।।५।।

पौढ़ावनी

राज के गुण गाऊं, मैं अपने श्याम के गुण गाऊं।
गुण गाऊं चरणन चित लाऊं, बहुरि न भवजल आऊं।।१।।
चुन चुन कलियां मैं सेज बिछाऊं, बंगलन फूल भराऊं।।२।।
सेज सुरंगी पर पिया जी पौढ़ाऊं, करसे बीड़ी आरोगाऊं।।३।।
हेत करके तरवा सोहराऊं, करसों बिजन डोलाऊं।।४।।
मीठी मीठी बातें करत पिया हम सों, सुन सुन के सुख पाऊं।।५।।

कहत मुकुंद पिया मिले हम सों, हंसि हंसि कंठ लगाऊं।।६।।

पौढ़ावनी

रंग परवाली पिया जी को मन्दिर,
रंग परवाली पिया जी को मन्दिर।।टेक।।
चौथी भोम नृत्य की बाखार,
नवरंग बाई नृत्य करे अन्दर।।१।।
झमक झमक पग धरत धरनि पर,
मन्दिर बीच उठत स्वर झांझर।।२।।
बारह हजार सखियन में बिहरत,
पूरणानन्द पिया सुख कंदर।।३।।
जुगल स्वरूप सुख सेज्या शयन कर,
मखमल तकिया धरें अति सुन्दर।।४।।
प्राग सखी बलि जाय चरण की,
सोय रहीं सखियां चरण धर हिय पर।।५।।

पौढ़ावनी

सोय रहे श्याम सखियन संग मोहोलन।
आये सखियां सब झरोखों उतरी,
छठी भोम आये सुखपालन।।१।।
विदा किये धानी खूब खुसाली,
ले सिर हुकम चले सब बंगलन।।२।।
पशु पंखी आज्ञा सब पाये,
आये सबहिं जहां बन सघनन।।३।।
युगल स्वरूप सुख सेज शयन कर,
नख सिख शोभा लसे अंग गहनन।।४।।
अति सों प्रेम प्रीति सों प्यारी,
गहि दोऊ हाथ लगाये हिय चरणन।।५।।

प्राग सखी बलि जाय चरण की,
लीला होत जहां तीन पोहोरन।।६।।
सोये रहे.....।

आनन्द मंगल

सदा आनन्द मंगल में रहिये,
सदा आनन्द मंगल में रहिये।
महाप्रसाद और चरणामृत,
यह सुख साथ में पईये।।१।।
इश्क सुराही प्रेम का प्याला,
अन्दर आत्म छकि रहिये।
तन सोवे रूह निशदिन जागे,
धाम धनी के चरणों रहिये।।२।।
अष्ट पोहोर दिन चौंसठ घड़ियां,
निशदिन पीउ पीउ पीउ कहिये।
छत्रसाल भजो धाम धनी जी को,
और देवन सों क्या चहिये।।३।।

समैया बधाई वसन्त आदि श्री साथ नो सिनगार

जोगमाया नो देह धरीने, श्री श्यामा जी थया तैयार।
ततखिण तिहां तेणे ठामे, मारे साथे कीधो सिणगार।।१।।
सोभा सागर साथ तणी, सखी केणी पेरे ए वरणवाय।
हूं रे अबूझ कांई घणूं नव लहूं एनो निरमाण केम करी थाय।।२।।
कोटान कोट जाणे सूरज उदया, ब्रह्माण्ड न माय झलकार।
प्रघल पूर जाणे सायर उलट्यो, एक रस थई सर्वे नार।।३।।
एक नख तणी जो जोत तमे जुओ, तेमां कई ने सूरज ढंपाए।
केम करी सोभा वरणवुं रे सखियो, मारो सब्द न पोहोंचे त्यांहें।।४।।
वली गुण जो जो तमे नखतणां, हूं तेहनो ते कहूं विचार।

सूरज दृष्टे तापज थाय, आणे अंग उपजे करार।।५।।
साथ तणी रे साड़ियो ज्यारे जोइए, तेमां रंग दीसे अपार।
अनेक विधना जवेरज दीसे, करे ते अति झलकार।।६।।
तेवा सरूप ने तेवा, भूखण तेज तणा अंबार।
ए अजवालूं ज्यारे जीव जुए, त्यारे सूं करे संसार।।७।।
मांहों मांहें वालाजी नी वातो, बीजो चितमां नथी उचार।
ततखिण वेण सांभलतां वल्लभ, खिण नव लागी वार।।८।।
मन उमंग वालाजी सूं रमवा, आयत अति घणी थाय।
आनन्द मांहे अति उजाय, धरणी न लागे पाय।।९।।
भूखण स्वर सोहामणा, मुख वाणी ते बोले रसाल।
ए स्वर ने ज्यारे श्रवणा दीजे, त्यारे आडो न आवे पंपाल।।१०।।
साथ सकल मारा वाला पासे आव्यो, मन आणी उलास।
विविध पेरे वाला जी सूं रमवा, चित मां नथी माया नो पास।।११।।
रस भर रंग वाला जी सुं रमवा, उछरंग अंग न माय।
इन्द्रावती बाई कहे धामना साथने, हूं नमी नमी लागूं पाय।।१२।।

श्री राज जी के प्रगटन समय की बधाई

आज वधाई वृज घर घर, प्रगटया श्री नंदकुमार।
दूध दधी ऊमर धोए, तोरण बांधे वृजनार।।१।।
एक बीजी ने छांटे नांचे, उमंग अंग न माय।
अनेक विधना बाजा रस बाजे, गृह गृह उछव थाय।।२।।
लई ने वधावा सांचरी, भवन भवन थी नार।
गाए ते गीत सोहामणां, साजे छे सकल सिणगार।।३।।
अबीर गुलाल उछालती आवें, छाया न सूझे सूर।
चाल चरण छवे नहीं भोमें, जाणे उमड़यो सागर पूर।।४।।
जुथ जुजवे जुवंतियों, उछरंगतियों अपार।
उछव करती आवियो, बाबा नन्दतणें दरबार।।५।।

धासमसियो मन्दिरमां पेसे, माननी सर्वे धाए।
नन्द ने वधावो दई वल्या, मांडवे मंगल गाए।।६।।
ब्राह्मण भाट गुणीजन चारण, मलया ते मांगणहार।
निरत नटवा गंधर्व, राग सांगीत थेई थेई कार।।७।।
नाद दुन्द पड़छन्दा पर्वतें, वरत्यो जय जय कार।
नंद गोप सहु गेहेला हरखे, खोलावे भण्डार।।८।।
गए गोधा अंन वस्तर पेहेराव्या, गोप सकल दातार।
केहेने धन केहेने भूखन, नव निध दे दे कार।।९।।
ए लीला रे अखंड थई, एहनो आगल थासे विस्तार।
ए प्रगटया पूरण पारब्रह्म, श्री महामति तणों आधार।।१०।।

स्यामा जी प्रगटन महोत्सव

श्री देवचन्द्र जी की बधाई

सखी तुम गावो री मंगलचार।।टेक।।
कुंवर बाई की कोख से प्रगटे, श्री श्यामा जी लियो अवतार।।१।।
गृह गृह तें चलीं भामिनी, गावत मंगलचार।
झुमक सब मिलीं आवत जात, साजि सकल सिनगार।।२।।
मृदंग मंजीरा ढ़ोल दमामा, बाजत बाजे अपार।
जय जयकार करत सब कोई, बंदीजन भाट पुकार।।३।।
चिरंजीवे तेरो बालक माई, सब कहत पुकार पुकार।
यहि समान बड़ो नहीं कोई, त्रैलोकी में निरधार।।४।।
कारज कारण हमरे राज आये हैं, आये बदल आकार।
मन वांछित फल दिये सबन को, धणी श्री देवचन्द्र जी दातार।।५।।
तब के बृज में अब के याहीं, आये धनी करतार।
आसानन्द मोहि आस धनी की, जो वतनियों के आधार।।६।।

बधाई श्री जी की

आज वधाई केसोराय घर, उदयो सूरज सुभान।
त्रिलोकी को तिमिर उड़ायो, अद्भुत ज्ञान करी।।१।।

धन धन नौतनपुरी नगरी, धन धन भादों मास।
कृष्ण पक्ष और दिवस चतुर्दशी, पूरन पुंज प्रकाश हो।।२।।
रविवार पहर दिन चढ़ते, प्रगटे प्राण जीवन हो।
जय जय कार वरत्यो वसुधामें, विजयाभिनन्द प्रगट हो।।३।।
धन धन धनबाई कोख जिन जायो, अखंड सुख सबन हो।
आये विलोकन करत हैं सखियां, अति सुख उपज्यो मन हो।।४।।
जुत्थ जुजवे युवती जोड़े आई, मंगल कलस सजाई हो।
धसी निज घर में भय नहीं मन में, उमंग अंग न माये।।५।।
कुम कुम केसर और अरगजा, अंबीर गुलाल उड़ायो हो।
अरस परस छिरकत छिरकावत, सुगंध सरस लगाये।।६।।
गान करत आली चहुं दिसते, मिलि बाजंत्र अनंत बधाई।
प्रगट भये श्री महामति केसो घर, अंगना बलि बलि जाई।।७।।

वधावो

धन्य घड़ी धन्य राज पधारिया,
नवला नेह वधारया रे।। वाला ने वधावो।।टेक।।१।।
ओचींता मारे मन्दरीये पधारिया,
ते मारे मन भाव्या रे।।वाला।।२।।
नवुं नगर नौतनपुरी कहावे धणी,
श्री देवचन्द्र जी नो वासो रे।।३।।
माता नुं नाम कुंवर बाई कहावे,
मत्तूमेहता घोर अवतरिया रे।।४।।
पहेरो चीर चुंदड़ी रंग चोली,
सिणगारो सर्वे टोली रे।।वाला..।।५।।
ठम ठम थाल भरुं सग मोती हार,
पहेरोने पनोती रे।।वाला...।।६।।
उभला त्रट जमुना नी गलीये,
अंगों अंग अमने मलिया रे।।वाला।।७।।

श्री सुन्दर श्री इन्द्रावती जीवन,
नवरंगना पिउ रसिया रे।।वाला।।८।।

राग वसंत

ऐसो वसंत खेलो मारी सजनी आवागमन मिट जाय।
उलटन नहीं दे अमलनी भारी, व्यापक वस्तु देखावे।।१।।
घणां ने गुलाल उड़ावो, मारी सजनी प्रेम भरी पिचकारी।
अविनासी संगे होरी खेलो, कबहूं न हैये हारी।।२।।
वस्तु रूपे व्यापक विश्वमां, समुंदर दरियो भरीयो।
सतगुरु सांचा जेने मलिया, तेणे ये वर वरीयो।।३।।
वेद सर्वे ने सत बतावे, पंडित कांइये न जाणे।
सखी आनन्द ये निर्भय थई ने, प्रेम तणो रस माणे।।४।।

अर्जी धाम चलन की

पीछला बाकी दिन, रह्यो घड़ी चार।
धाम वतन चलन की, मोमिन करें विचार।।१।।
अरस की निमाज का, आए पहुंचा बखत।
मोमिन अरज करत हैं, सामें होए तखत।।२।।
हमको इन खेल से, सिताब काढ़ो श्री राज।
भए मनोरथ पूरन, रह्या न कोई काज।।३।।
श्री धाम धनी सुनत हैं, ए वानी जो मकबूल।
द्वाए जो मोमिनों की होत है कबूल।।४।।

अर्जी सुन्दर साथ करें, चरणों में होके खड़े
पिया जी, धनी जी, खेल को बस करो, दिन बीते हैं बड़े...१
अर्श में प्रीतम से, क्यों रब्द हमने की,
खेल क्यों मांग लिया, यह समझ हम में न थी,
पिया जी, धनी जी खेल को बस करो, दिन बीते हैं बड़े...२
माया भी देखी है, दुःख भी देखा है

खेल भी देख लिया, इश्क भी देखा है
पिया जी, धनी जी, ले चलो, ले चलो दिन बीतें हैं बड़े.....३
आपकी जुदाई को, अंगना कैसे सहे,
हैं शर्म सार हमहीं, आप से कैसे कहें,
पिया जी, धनी जी, ले चलो ले चलो, दिन बीते हैं बड़े....४
अंगना जान के ही, आपने जगाया है,
ले के चलते क्यों नहीं, समझ न आया है।
बल हमरा न चला, साथ चरणों में पड़े, अर्जी.....

अर्जी

पियाजी तुम हो तैसी कीजियो, मैं अर्ज करूं मेरे पिउ जी।
हम जैसी तुम जिन करो, मेरा तलफ तलफ जाए जीउ जी।।१।।
जीवरा तो जीवे नहीं, क्यों मिटे दिल की प्यास जी।
तुम बिना मैं किनसों कहूं, तुम हो मेरी आस जी।।२।।
आस बिरानी तो करूं, जो कोई दूसरा होये जी।
सब विध पिया जी समरथ, दिन रैन जात रोए रोए जी।।३।।
जनम अंधी जो मैं हुती, सो क्यों देखूं नीके कर जी।
जब तुम आप दिखाओगे, तब देखूंगी नैन नजर जी।।४।।
ए पुकार पिया जी सुन के, ढ़ील करो अब जिन जी।
खिन खिन खबर लीजिए, मैं अर्ज करूं दुलहिन जी।।५।।
ऐती अर्ज मैं तो करूं, जो आड़ी भई अन्तराए जी।
सो आड़ी अन्तराए टालि के, दुलहा लीजे कंठ लगाए जी।।६।।
कंठ लगाइए कंठ सों, पिया जी कीजे हांस विलास जी।
वारणे जाए श्री इन्द्रावती, पिया जी राखों कदमों पास जी।।७।।
तुम दुलहा मैं दुलहिन, और न जानों बात जी।
इश्क सों सेवा करूं, सब अंगो साख्यात जी।।८।।
सदा सुख दाता धाम धनी, मैं कहा कहूं किनसो बात जी।
श्री महामति जुगल सरूप पर, अंगना बलि बलि जात जी।।९।।